हरिः ॐ

बालकों के मोटा

लेखक : मुकुल कलार्थी
संपादक : डॉ. घनान्द शर्मा 'जदली'
अनुवादक : डॉ. कविता शर्मा

प्रकाशक : ट्रस्टी-मंडल,
हरि:ॐ आश्रम, जहांगीरपुरा, रांदेर, सुरत-३९५००५.
फोन : (०२६१) २७६५५६४

© हरि:ॐ आश्रम, सुरत, नडियाद.

आवृत्ति : प्रथम

प्रत : २०००

मूल्य : ५-०० रू.

प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, जहांगीरपुरा, सुरत-३९५००५.
(२) हरि:ॐ आश्रम, पो. बो. नं. ७४, नडियाद-३८७००१.

अक्षरांकन : दुर्गा प्रिन्टरी
खानपुर, अहमदाबाद.
फोन : (०७९) २५५०२६२३

मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.
सिटी मिल कम्पाउन्ड, कांकरीया रोड,
अहमदाबाद-३८० ०२२.
फोन : ०७९-२५४६९१०१

॥ हरिः ॐ ॥

समर्पणांजलि

पू. श्रीमोटा के प्रेमी स्वजन दंपती

स्व. मुकुल कलार्थी और गं. स्व. निरंजनाबहन कलार्थी को यह प्रकाशन पूर्ण प्रेम से समर्पित करते हुए हम धन्यता का अनुभव करते हैं ।

दि. २९-७-२००७
गुरुपूर्णिमा, सुरत.

– ट्रस्टी-मंडल
हरिः ॐ आश्रम, सुरत

अनुक्रमणिका

१. सुनिए श्रीमोटा की बातें ९
२. मुझे भी बड़ा आदमी बनना है १०
३. काम करने का आनंद १३
४. तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है १५
५. मेहनत के अनुसार मजदूरी दो १६
६. गरीब की बात कौन सुने? १७
७. गाय नहीं बेचने दी १९
८. पाठशाला में सफाई का काम करते हुए पढ़ाई २२
९. चार अंग्रेजी कक्षाएँ डेढ़ साल में २४
१०. इन्स्पेक्टर का मन जीत लिया २६
११. पहले मेरा काम देखें, फिर रखें २८
१२. मुझसे झूठ का व्यापार नहीं होगा! ३०
१३. परायों को अपना बनाया ३४
१४. संत ने सहायता की ३६
१५. दायित्वपूर्ण कॉलेज जीवन ३८
१६. डेढ़ आने में भोजन ४१
१७. सिनेमा देखना बंद किया ४२
१८. देश की आझादी के लिए कूद पड़ो ४४
१९. नामस्मरण का चमत्कार ४७
२०. सद्गुरुओं का समागम ४९
२१. अखण्ड नामस्मरण ५१
२२. हरि ने लाज रखी ५२
२३. दिल जीत लेनेवाला नौकर ५४
२४. चोर ने गहने लौटाए ६०
२५. हरिः ॐ आश्रम ६४
२६. श्रीमोटा का अनोखा कार्य ६६
२७. जीवन धन्य किया ६८
२८. साधनामर्म ७१
२९. पूज्य श्रीमोटा के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ ७५

॥ हरिःॐ ॥

निवेदन

पू. श्रीमोटा का आध्यात्मिक साहित्य गुजराती भाषा के सिवाय अन्य भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है । इसलिए हरिःॐ आश्रम, सुरत, नडियाद के साधकों की मांग के प्रत्युत्तर में यह प्रकाशन किया गया है ।

श्री मुकुल कलार्थी लिखित 'बालकों के मोटा' की आवृत्ति का यह हिन्दी प्रकाशन पू. श्रीमोटा के जीवन के विषय में प्राथमिक जानकारी के लिए हिन्दी भाषी बालकों के लिए खूब उपयोगी सिद्ध होगा ।

इस प्रकाशन का हिन्दी भावानुवाद डॉ. कविता शर्मा ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत प्रेमभक्तिभाव से सद्‌भावपूर्वक किया है । उनके हम खूब-खूब आभारी हैं ।

इस प्रकाशन का संपूर्ण मुद्रणकार्य श्री श्रेयसभाई पंड्या, साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद ने भी पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत प्रेमभक्तिभाव से सद्‌भावपूर्वक किया है । उनको भी हम खूब-खूब धन्यवाद की कामना करते हैं कि पू. श्रीमोटाकी कृपा उन पर सदा के लिए बरसती रहे ।

हम आशा करते हैं कि इस प्रकाशन से लोग यथोचित लाभ उठायें और अपना जीवन धन्य बनायें ।

दि. २९-७-२००७
गुरुपूर्णिमा, सुरत.

— ट्रस्टी-मंडल
हरिःॐ आश्रम, सुरत

मुझे समाज को उपर उठ़ाना हैं★ ।

– मोटा

★समाज में साहस, हिंमत, शौर्य, पराक्रम, धीरज, सहनशीलता, प्रामाणिकता, निष्ठा, उदारता आदि दैवी गुणों विकसीत हो, साथ-साथ भगवान की भक्ति की भावना भी विकसीत हो ।

बालकों के मोटा

■

मुकुल कलार्थी

‘मैं सर्वत्र विद्यमान हुं.’

—मोटा

‘जीवनदर्शन’, १० आवृत्ति, पृ. ३८२

(१) सुनिए श्रीमोटा की बातें

आप सभी ने श्रीमोटा का नाम सुना ही होगा ।
उनका नाम था चुनीभाई ।
परन्तु सभी उन्हें 'मोटा' कहकर बुलाते ।
मोटा के पिताजी का नाम आशाराम भगत था ।
मोटा की माताजी का नाम सूरजबा था ।
वडोदरा जिले में सावली नाम का गाँव ।
मोटा का जन्म सावली गाँव में हुआ था ।
ई. स. १८९८ के सितम्बर की चौथी तारीख ।
भाद्रपद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी ।
श्रीमोटा का जन्मदिन ।
आशाराम भगत के चार बेटे थे ।
चुनीभाई के बड़े भाई जमनादास, चुनीभाई से छोटे मूलजीभाई और सोमाभाई ।
आशारामबापा रंगरेजी का धंधा करते थे ।
आशारामबापा बाद में पंचमहाल जिले के कालोल नामक गाँव में रहने लगे थे ।
कुटुम्ब की स्थिति ठीक न थी ।
पिता की कमाई कम और कुटुम्ब बड़ा ।

परन्तु माता सूरजबा मेहनती थी ।
गाँव के सुखी कुटुम्बों में घरकाम करने जाती ।
किसी का अनाज पीसने का काम करती ।
कूटने का काम भी करती ।
इस प्रकार सूरजबा मजदूरी का काम करती थीं ।
इससे कुटुम्ब को थोड़ा बहुत सहारा मिल जाता था ।
ऐसे गरीब कुटुम्ब में जन्मे चुनीभाई 'मोटा' बने ।
सुनिए, अब श्रीमोटा की प्रेरक बातें ।

• • •

(२) मुझे भी बड़ा आदमी बनना है

आशारामबापा को हुक्का पीने की आदत थी ।
इसके लिए बार-बार अंगारे चाहिए ।
इसलिए घर के आँगन के पास उपलों को सदा जलते हुए रखते ।
सावली गाँव में सिपाही रात को चक्कर लगाने निकलते ।
आशाराम भगतजी के आँगन में थकान मिटाने बैठते ।
कोई सिपाही हुक्का के दो चार दम भी लगाते ।
एक रात दो सिपाही फेरी लगाते हुये वहाँ आए ।
भगतजीके पास बैठे ।
बातों ही बातों में एक सिपाही ने पूछा :
'अरे भगत! बरामदे की चारपाई पर कौन सो रहा है?'
भगत ने उत्तर दिया :

'मेहमान है ।'

उस सिपाही ने पूछा :

'पुलिसचौकी को खबर क्यों नहीं दी?'

उस जमाने में चोरी करनेवाली कितनी ही प्रसिद्ध जातियाँ थी ।

यदि कोई मेहमान उनके यहाँ आए तो उसकी खबर पुलिस चौकी को देने का एक रिवाज था ।

इसलिए भगतजीने कहा :

'हमें ऐसी खबर देने की जरूरत नहीं है ।'

यह सुनते ही न जाने सिपाही को गुस्सा आ गया ।

वह भगतजी को बेहद मारने लगा ।

मारते-मारते पुलिसचौकी तक घसीटते हुए ले गया ।

किशोरवय के मोटा बरामदे में ही सो रहे थे ।

इस घटना को देखकर वे स्तब्ध हो गए ।

पिता की ऐसी स्थिति नहीं देख पाये ।

इतने में ही मोटा को कुछ उपाय सूझा ।

वे नागरवाड़ा की ओर दौड़कर चले गए ।

नागरवाड़ा में रावसाहब मनुभाई रहते थे । वे भगत के कुटुम्ब को पहचानते थे । सूरजबा उनके घर अनाज पीसने और कूटने का काम करती थी ।

मोटा ने आधी रात में दरवाजे को जोर से खटखटाया ।

रावसाहब घबराहट के साथ जाग गए ।

मोटा ने सिसकते सिसकते कहा :

'साहब, मेरे पिता को बचाइए । कुछ भी अपराध किये बिना सिपाही ने मेरे पिताजी को बहुत मारा । घसीटते हुए पुलिसचौकी ले गए ।'

रावसाहब ने तुरन्त घोड़ागाड़ी जुतवाई । मोटा को लेकर वे पुलिसचौकी गए ।

उन्होंने भगतजी को छुड़वाया ।

यह सब देखकर मोटा सोचने लगे :

'दुनिया में गरीब की दशा खराब है । गरीब को सभी धुतकारते रहते हैं । उसका अपमान करते हैं ।'

'हम भले ही गरीब हों ।'

'पर हमारा कोई अपमान न करे, इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?'

विचार करते हुए मोटा की समझ में आया :

'तालुके के मामलतदार को सभी सलाम करते हैं ।'

'बड़े-बड़े लोग उन्हें मान देते हैं ।'

'मुझे भी ऐसा बड़ा आदमी बनना है ।'

'इसके लिए क्या करना चाहिए?'

'बहुत सारी पढ़ाई करनी चाहिए ।'

मोटा को किशोरावस्था में पढ़ने की लगन जागी ।

भले ही असुविधा हो ।

भले ही दुःख सहने पड़ें ।

सब कुछ सहन करते हुए आगे पढ़ना है ।

मोटा ने ऐसा दृढ़ निश्चय किया ।

• • •

(३) काम करने का आनंद

'मोटा' उम्र में छोटे थे ।

परन्तु समझ उनकी बड़ों जैसी थी ।

माँ बेचारी लोगों का अनाज पीसने, कूटने का काम करतीं। दूसरों के घर घरकाम करने जातीं ।

मोटा सोचने लगे :

'मैं बैठा रहूँ यह कैसे चलेगा?'

'घर में कुछ मदद करनी चाहिए!'

'चलो, मैं मजदूरी करने चलूँ ।'

एक बार मोटा को पता चला कि इँटोकी भट्ठी में मजदूरी मिलती है।

मोटा वहाँ अकेले पहुँच गए ।

देखभाल करनेवाले भाई ने पूछा :

'ऐ लड़के, यहाँ क्यों आए हो?'

मोटा ने उत्तर दिया :

'काम करने ।'

वह भाई बोला :

'देख लड़के, यहाँ तुम्हारे लायक काम नहीं है । तुम गरम इँटें उठा पाओगे?'

मोटा को तो काम से मतलब था । घर में मददगार बनना था । यों हिंमत हार जाएँ ऐसे वे न थे । मोटा हिंमत के साथ बोले :

'मैं गरम गरम इँटें उठाऊँगा ।'

छोटे लड़के का उत्साह देखकर वह भाई बोला :

'अच्छा, तो आज से काम में लग जाओ । देखो, बीच में से भाग मत जाना ।'

इँटों की भट्ठी में अन्य मजदूर भी काम कर रहे थे । मोटा उनके साथ काम में जुट गए ।

मोटा सबके साथ गरम-गरम इँटें उठाने लगे ।

इँटों की भट्ठी यानी धधकती हुई आग ।

उसमें से गरम-गरम इँटें निकालना खेल न था । गरम इँटें उठाते हुए हाथ जलते । कितनी ही बार अंगारे की तरह चिपक जाते ।

नन्हे मोटा जल जाते । पर पीछे हटें वे कोई दूसरे ।

मोटा गुपचुप दु:ख सहने लगे ।

बड़े लोगों जैसा ही काम करते थे ।

शाम को काम बंद होता तब देखभाल करनेवाले भाई सभी की इँटें गिनते ।

इँटों के अनुसार पैसा देते ।

मोटा पैसे लेकर घर दौड़ते हुए जाते ।

हथेली और उंगलियाँ सिककर-जलकर लाल लाल हो जाती थीं ।

मोटा उस ओर ध्यान ही न देते ।

मोटा को तो मात्र काम करने का आनंद था ।

घर में थोड़ी-बहुत मदद करने का आनंद ।

• • •

(४) तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है

मोटा कई बार मिस्त्री का काम करनेके लिए तैयार होते ।

छोटे से प्यारे लड़के को देखकर मिस्त्री बोला :

'लड़के, काम ठीक से करना । खेलना-वेलना नहीं ।'

मोटा उत्साह से रेती, सिमेन्ट आदि इकट्ठा करते । उचित मात्रा में पानी डालते । सुन्दर ढंग से धोल तैयार करते ।

जरा भी आलस किये बिना वे इँटें उठाते । ठीक से मिस्त्री के आगे रखते ।

मिस्त्री 'छोटे से आदमी' का काम देखकर खुश-खुश हो जाता ।

शाम को काम पूरा होता ।

मिस्त्री मोटा से बोला :

'लड़के, तुम्हारा काम मुझे अच्छा लगता है । कल काम पर आ जाना ।'

मोटा हकार में सिर हिला देते ।

मजदूरी के पैसे लेकर घर जाते ।

बहुत खुश हो कर जाते ।

मानो कि कहीं खेल खेलकर घर जा रहे हों ।

काम में भी आनंद लूटते ।

जिससे मजदूरी भार जैसी न लगती ।

• • •

(५) मेहनतके अनुसार मजदूरी दो

आसपास के खेतों में कपास बीनने का समय आता ।

किसान कपास बीनने मजदूरों को रखते ।

मोटा भी काम करने खेत में पहुँच जाते ।

मोटा डोंड़ा बीनने का काम बड़े उत्साह से करते ।

छोटे-छोटे हाथ तेजी से काम करते ।

मोटा बड़े से बड़ों को भी पीछे छोड़ देते ।

मजदूर तो चालाक हो गये होते हैं ।

थोड़ा काम करें और बीड़ी पीने बैठ जाएँ । बीड़ी पीते-पीते गप्पेबाजी करते ।

इतना ही नहीं मजदूर तो काम भी धीरे-धीरे करते ।

परन्तु बालक मोटा कामचोरी न करते ।

काम यानी काम ।

मोटा मानते थे :

'हमें सौंपा गया काम यदि हम ठीक ढंग से न करें तो भगवान खुश न होंगे ।'

'जैसी दानत वैसी बरकत ।'

'शुद्ध दानत से कर्तव्य-पालन करने से फल भी अच्छा मिलता है ।'

बालक मोटा के ऐसे विचार थे ।

मोटा दिनभर उमंग से काम करते ।

शाम तक डोंड़ा का ढेर बना देते ।

किसान बहुत खुश हो जाते ।

मोटा की पीठ थपथपाकर किसान कहते :

'शाबाश! बालक, शाबाश!'

परन्तु किसान मजदूरी देने में पक्षपात करते ।

मोटा को मजदूरी कितनी देते?

छोटे लड़के को दी जाए उतनी ।

खाना भी उसी हिसाब से देते ।

मोटा कई बार किसान से कहते :

'आप मुझे शाबाशी देते हो परन्तु मजदूरी तो लड़के के हिसाब से देते हो ।'

'मेरा काम देखो और मजदूरी दो ।'

'सारे दिनभर बड़ों जैसा काम करता हूँ । इससे भूख भी जमकर लगती है न?'

'इस विषय में सोचो तो अच्छा ।'

परन्तु छोटे से लड़के की बात कौन सुने?

किसान बात को हँसी में उड़ा देते ।

• • •

(६) गरीब की बात कौन सुने?

खेत में बोआई का समय आता ।

मोटा खेत में मजदूरी करने दौड़ जाते ।

किसान बालक मोटा को देखकर बोले :

'लड़के, सुनो! पौधे रोपने में ढीलापन नहीं चलेगा ।'

'बरसात मुसलाधार बरसता हो । पर, काम ठीक ढंग से करते हुए रहना पड़ेगा ।'

'इसमें छोटे लड़के का काम नहीं ।'

मोटा विनयपूर्वक बोले :

'मुझे काम देकर देखें । काम देखकर मजदूरी देना ।'

किसान कहता :

'ठीक है । पर तुम्हें बड़ों की तरह काम करना होगा ।'

'बड़ों की पंक्ति में रहकर काम करना होगा । उन लोगों जितना ही काम करना होगा ।'

'बोलो, हो तैयार?'

मोटा ने खुश होकर हाँ कहा ।

धान का पौधा बोना याने क्या?

दिनभर पानी से भरी हुई क्यारी में खड़ा रहना पड़ेगा ।

कितनी ही भारी मुसलाधार बरसात भी बरसता होगा ।

दिनभर खड़े पैरों पर झुककर पौधे रोपने पड़ते हैं ।

बालक मोटा दिनभर मुसलाधार बरसात में पैर धँस जांए ऐसे कीचड़ में काम करते ।

शाम तक मोटा थककर चकनाचूर हो जाते ।

दिन में किसान सभी मजदूरों को खाना देता ।

बड़ी उम्र के मजदूरों को दो मोटी रोटियाँ और सब्जी मिलती ।

मोटा तो छोटे लड़के थे ।

किसान उन्हें मात्र एक मोटी रोटी और थोड़ी सी सब्जी देता ।

मोटा ऐसे भेदभाव को देखकर कहते :

'आप काम तो बड़ो जितना लेते हो ।'

'खाना क्यों छोटे बालक जितना देते हो ।'

किसान ने बेरुखी से उत्तर दिया :

'यह तो रिवाज के अनुसार दिया जाएगा ।'

'तुम्हारे अकेले के कारण रिवाज नहीं बदले जा सकते ।'

'तुम्हें ठीक लगता हो तो रहो, नहीं तो चलते बनों ।'

मोटा को लगा :

'यह तो बेचारे गरीब का शोषण है ।'

'हमारी बात भले ही सच्ची हो पर सुनेगा कौन?'

• • •

(७) गाय नहीं बेचने दी

मोटा के घर एक गाय थी ।

गाय को बाँधने की जगह नहीं थी, इसलिए घर के पास रास्ते पर ही उसे बाँधा जाता ।

सूरजबा घर का काम करती और दूसरे घरों में भी काम करने जातीं । इससे गायकी देखभाल नहीं हो पाती थी ।

एक दिन सूरजबा ने घर में कहा :

'अपना गुजारा बड़ी मुश्किल से हो पाता है, फिर गाय को कहाँ से खिलाएँगे ?'

'मैं भी दिनभर काम के बोझ से दबी रहती हूँ ।'

'इसलिए मैं गाय की देखभाल नहीं कर पाती हूँ ।'

'हम गाय को बेच दें तो अच्छा ।'

बालक मोटा बोले :

'माँ, यदि गाय तुम्हारा ही बालक होता तो?'

'क्या तुम उसे बेच देतीं?'

यह सुनकर माँ उत्तेजित हो उठी :

'मेरे बाप! तुम्हें बोलबोल करने की बहुत खराब आदत है ।'

'गाय को पालना आसान काम नहीं है । इसका तुमने विचार भी किया है क्या?'

'हमारे पास गाय को बाँधने की जगह भी नहीं है ।'

'गाय के लिए हम घास भी नहीं ला सकते हैं ।'

'गोबर और मूत्र से रास्ता बिगड़ता है । इसी कारण मुझे रोज लोगों की बातें सुननी पड़ती हैं ।'

'इन सब का विचार करो ।'

'अक्ल बिना की बात मत करो ।'

'बेकार की बाँते मत करो ।'

मां को मोटा ने शांति से कहा :

'माँ, तुम्हारी बात सच है ।'

'पर अब से सारी गंदगी मैं साफ करूँगा ।'

'गाय के लिए घास का चारा भी मैं ले आऊँगा ।'

'गाय को रोज नहलाऊँगा ।'

'बोलो माँ! अब तो गाय को नहीं बेचोगी न?'

'गाय तो हमारी माता कहलाती है, उसकी तो पूजा करनी चाहिए ।'

माँ ने मोटा की बात हँसकर टाल दी और कहा :

'अब रहने दे अपनी डींग मारना! देखती हूँ गाय की देखभाल तुम कैसे करते हो ।'

'बोला हुआ करके बता तो मानूँ ।'

दूसरे ही दिन मोटा प्रातःकाल उठे ।

गोबर उठाकर एक तरफ ढेर कर डाला ।

रास्ते पर गाय के गोबर एवं मूत्र से बहुत गंदगी हो गई थी ।

मोटा ने उस जगह में कोरी मिट्टी डाल दी ।

इससे सीलन कम हुई साथ ही मक्खियाँ भिनभिनानीं कम हो गईं ।

अब केवल एक समस्या थी, घास को कहाँ से लाया जाएँ ?

कालोल गाँव, तालुका का मुख्य केन्द्र । वहाँ व्यापार अच्छा चलता था ।

बड़े सवेरे आसपास के गाँवों से बैलगाड़ियां आतीं । बैलगाड़ियों में साग-सब्जी, अनाज आदि भरे होते ।

गाँव के सिवान पर गाड़ियाँ खुलतीं । गाड़ीवाले बैलों को खोल देते । घास के पूलों को खाने के लिए डालते फिर बाजार में काम करने जाते ।

काम समाप्त कर गाँव के लोग लौट जाते । शाम को सारी बैलगाड़ियाँ चली जातीं ।

मोटा शाम को सिवान पर जाते । वहाँ खाये बिना के पूलों को इकट्ठे करते । उन सब की गठरी बाँधकर घर ले आते ।

पूले गाय को डालते ।

मोटा जिस पाठशाला में पढ़ते थे, वहाँ किसानों के लड़के भी पढ़ने आते ।

मोटा की दोस्ती सभी विद्यार्थियों से थी ।

मोटा सुबह और शाम उन लड़कों के खेत में जाते । उनसे अनुमति लेकर खेत के किनारे उगी घास को काट लाते ।

गाय को ताजा हरा घास प्रेम से खिलाते ।

यह सब देखकर माँ बहुत खुश हो जातीं ।

• • •

(८) पाठशाला में सफाई का काम करते हुए पढ़ाई

मोटा गाँव की प्राथमिक पाठशाला में पढ़ते थे ।

मोटा घर में काम करते और स्कूल में पढ़ते भी थे ।

उनकी स्मरणशक्ति अच्छी थी । पाठशाला में बहुत ध्यान से पढ़ते ।

मोटा सबकुछ जल्दी से सीख जाते थे ।

शिक्षक भी अच्छे थे । वे इस गरीब, मेहनती और होशियार विद्यार्थी पर प्रेम रखते थे ।

मोटा पाठशाला में मात्र पढ़ते ही नहीं थे ।

मोटा पढ़ते और पढ़ाते भी थे ।

कक्षा में कितने ही विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर थे । मोटा उन्हें पढ़ने में मदद करते ।

मोटा बचपन से ही अधिक समझदार थे ।

'अन्य सभी वस्तु देने से घटती हैं, किन्तु विद्यादान जैसे-जैसे दूसरों को देते जाओ वैसे-वैसे बढ़ता जाता है ।'

उन्हीं दिनों, कालोल में अंग्रेजी पाठशाला खुली ।

पाठशाला नयी, इसलिए फीस रखी गई थी ।

मोटा आगे पढ़ना चाहते थे ।

परन्तु फीस कहाँ से लावें? प्रारंभ में माफी भी कौन देगा?

घर से पिता फीस दें, एसे न थे ।

दृढ़ निश्चय हो वहाँ भगवान मार्ग खोल देते हैं ।

मोटा प्रधानाध्यापक के पास गए ।

उन्होंने विनयपूर्वक अपनी गरीब स्थिति प्रधानाध्यापक को बतलाई।

फिर मोटा ने नम्रता से कहा :

'साहब, मुझे पाठशाला में पढ़ना तो है ।'

'इसलिए मुझ पर इतनी कृपा करें ।'

'मुझे पाठशाला में सफाई का काम करने को दे दीजिए ।'

'इसमें से मैं फीस आदि का खर्च निकाल लूँगा ।'

प्रधानाध्यापक समझदार थे । उत्साही विद्यार्थी की बात से खुश हुए। उन्होंने मोटा को सफाई का काम सौंप दिया ।

मोटा ने दूसरे ही दिन से सफाई का काम शुरू कर दिया ।

मोटा पाठशाला का मकान ठीक से बुहारते ।

बेन्चों, कुर्सियों, टेबलों, पाट आदि सभी को झाड़कर ठीक से साफ करते ।

कहीं भी धूल दिखायी न देती ।

मोटा काम में जरा भी आलस नहीं करते ।

कभी-कभी मोटा को चपरासी का काम भी सौंपा जाता ।

मोटा उस काम को भी उत्साह से करते ।

मोटा में बचपन से ही एक बड़ा सद्‌गुण था :

'अपने हिस्से में जो भी काम आये उसे सच्चे दिल से और व्यवस्थित करना ।'

'काम करने में जरा भी आलस या प्रमाद न करते ।'

मोटा ऐसे सारे काम करते और पढ़ते भी ध्यान से ।

मोटा ठीक से समझते थे कि,

'पढ़ने के लिए मैं पाठशाला में दाखिल हुआ हूँ ।'

'पाठशाला में पढ़ने के लिए मैं सफाई का काम आदि करता हूँ ।'

'इसलिए मेरा प्रथम धर्म ध्यानपूर्वक पढ़ाई करना है ।'

'इसमें गलती नहीं करनी चाहिए, असावधानी नहीं चल सकती और बेदरकारी भी नहीं होनी चाहिए ।'

इसलिए मोटा बहुत मन लगाकर पढ़ाई करते ।

कक्षा में प्रथम रहते ।

• • •

(९) चार अंग्रेजी कक्षाएँ डेढ़ साल में

मोटा कालोल गाँव की अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ते थे ।

मोटा पढ़ते तो थे किन्तु उन्हें बार-बार घर की गरीब स्थिति का विचार आ जाता ।

जल्दी-जल्दी पढ़ाई पूरी हो जाए तो कितना अच्छा ।

किसी नौकरी में लग जाऊँ तो माता-पिता की तकलीफों में कुछ राहत दे सकता हूँ ।

एक दिन मोटा के मन में विचार आया :

'प्रभुकृपा से दो-चार वर्ष कूद जाएँ तो कितना अच्छा! इतने वर्ष बच सकते हैं ?'

मोटाने प्रधानाध्यापक से बात करने की सोची ।

मोटा में बचपन से ही एक बात की समझ स्पष्ट थी :

'हम कुछ भी कार्य शुभ उद्देश्य से करना चाहते हों, उसे प्रार्थनाभाव से प्रभुजी के चरणों में व्यक्त करते रहना चाहिए ।'

'इससे हमारे उस शुभ उद्देश्य का फल अच्छा आता है ।'

'अपने विरोधी के लिए भी मन में सद्भाव रखें और प्रार्थना करनी चाहिए ।'

'ऐसा करने से उसके साथ मित्रता हो जाती है ।'

विद्यार्थी मोटा ने अपने शुभ उद्देश्य को केन्द्र में रखा ।

दिल में प्रार्थना का भाव दृढ़ किया ।

इस तरह प्रधानाध्यापक के साथ संबंध स्थापित किया ।

मोटा प्रधानाध्यापक के घर जाते । बाजार से सब्जी आदि ले जाते । घर के कामों में कुछ न कुछ मदद करते । बालकों के साथ खेलते ।

इससे प्रधानाध्यपक की पत्नी भी मोटा पर सद्भाव रखतीं ।

मोटा को कुछ न कुछ खाने को देतीं । घर के बच्चों जैसा भाव रखतीं ।

ऐसा करते-करते मोटा घर के आदमी जैसे ही हो गये ।

प्रधानाध्यापक भी मोटा को पढ़ने में मदद करते ।

मोटा ने एक दिन बात-बात में प्रधानाध्यापक से कहा :

'साहब, मुझे कम समय में अधिक कक्षाएँ एक साथ करनी हैं ।'

'कुछ वर्ष बचें तो पिताजी को जल्दी से मदद कर सकूँगा ।'

प्रधानाध्यापक इस दृष्टि से मोटा को पढ़ाने लगे ।

मोटा भी मेहनत से पढ़ने लगे ।

उन्होंने अंग्रेजी की चार कक्षाएँ डेढ़ वर्ष में पूरी कर डालीं ।

• • •

(१०) इन्स्पेक्टर का दिल जीत लिया

मोटा ने प्रधानाध्यापक की मदद से डेढ़ वर्ष में अंग्रेजी की चार कक्षाएँ पूरी कर डालीं ।

पर परीक्षा का क्या?

मोटा ने प्रधानाध्यापक से बात की ।

प्रधानाध्यापक ने उनसे कहा :

'मुझे परीक्षा लेने में कोई आपत्ति नहीं है । परन्तु इसके लिए शिक्षा-विभाग की मंजूरी लेनी पड़ेगी ।'

'इसकी सत्ता इन्स्पेक्टर साहब के पास होती है ।'

मोटा इस कठिनाई से मार्ग निकालने के लिए तत्पर हुए ।

मोटा इन्स्पेक्टर साहब के पास पहुँच गए ।

मोटा उनके पास जाकर प्रणाम कर खड़े रहे ।

इन्स्पेक्टर साहब ने सिर पर पगड़ी पहनी थी । इस पर मोटा का ध्यान गया ।

पगड़ी थोड़ी-सी फीकी लगी । मोटा ने विनयपूर्वक उन्हें कहा :

'साहब, एक बात कहूँ? आपकी पगड़ी फीकी हो गई है । मुझे रंगने दीजिए । मैं सुंदर ढंग से रंग दूँगा ।'

साहब को लड़का पसंद आ गया । उन्होंने मोटा को पगड़ी रंगने दे दी ।

सावधानीपूर्वक मोटा ने पगड़ी को सुंदर ढंग से रंग डाला ।

मोटा साहब के पास गये और पगड़ी दी ।

साहब ने पगड़ी पहनकर देखी ।

वे बहुत खुश हो गये ।

साहब ने मोटा को धन्यवाद दिया । इतनी अच्छी तरह पगड़ी रंगने के लिए पैसे देने लगे ।

मोटा ने विनयपूर्वक पैसे नहीं लिये ।

साहब ने मोटा से कहा :

'लड़के, कुछ कामकाज हो तो कहना ।'

मोटा को भी यही चाहिए था । उन्होंने नम्रतापूर्वक साहब से प्रार्थना की :

'साहब, एक बिनती है । हमारे घर की स्थिति कमजोर है ।'

'इसलिए मैं चाहता हूँ कि, कम समय में पढ़ाई पूरी कर पिताजी को मदद करने के लिए काम पर लग जाऊँ ।'

'मैंने मिडल स्कूल का सारा पाठ्यक्रम पूरा कर दिया है । अब अंतिम परीक्षा बाकी है ।'

'जिसकी सत्ता आपश्री के पास है ।'

'कृपा करके मुझे परीक्षा देने की अनुमति दें ।'

'मैं आपका आभार, कभी नहीं भूलूँगा ।'

साहब बोले :

'जाओ, घबराना नहीं । सब कुछ हो जाएगा ।'

एक दिन साहब पाठशाला की मुलाकात लेने आए ।

उन्होंने प्रधानाध्यापक से मोटा की पढ़ाई के विषय में पूछा ।

प्रधानाध्यापक मोटा की पढ़ाई, उनके विनय, विवेक और कामकाज से खुश थे ।

प्रधानाध्यापक ने मोटा के विषय में बहुत अच्छा अभिप्राय दिया ।

इन्स्पेक्टर साहब को संतोष हुआ । उन्होंने मोटा की परीक्षा की व्यवस्था कर दी ।

मोटा ने बहुत अच्छी तरह से परीक्षा पास कर डाली ।

• • •

(११) पहले मेरा काम देखें, फिर रखें

कालोल गाँव में अंग्रेजी चार कक्षा तक की ही पाठशाला थी ।

पाँचवी कक्षा के लिए गाँव के बाहर जाना पड़ता था ।

माता-पिता ने मोटा से कहा :

'बेटा, अधिक पढ़कर क्या करोगे ? हम रहे गरीब आदमी ! इतनी पढ़ाई बहुत हो गई ।'

'अब कहीं कमाने लग जाओ । घर में दो पैसे की मदद होगी ।'

मोटा उम्र में छोटे थे पर समझदार अधिक थे । मोटा ने भी सोचा :

'पिताजी बेचारे कितना करेंगे? माँ भी दूसरों के घरों में काम करके थक जाती है ।'

'अभी कुछ समय कुछ काम-धंधा कर लूँ । फिर पढ़ाई होती रहेगी ।'

मोटा नौकरी करने को तैयार हो गए । पिताजी उन्हें गोधरा ले गए ।

पिताजी को गोधरा में एक व्यापारी पहचानते थे । पिताजी उनके पास गए ।

पिताजी ने व्यापारी से घर की स्थिति के विषय में बात की । फिर पिताजी ने प्रार्थना करते हुए कहा :

'शेठजी, मेरे बेटे को आपकी दूकान में नौकरी पर रख लीजिए । बड़ी मेहरबानी होगी ।'

व्यापारी मोटा को देखकर बोले :

'भगत, आपका बेटा तो अभी बहुत छोटा है ! उसे नौकरी पर रखकर क्या करूँगा?'

उसे काम भी कौन-सा दूँ? वह काम नहीं कर पाएगा ।'

यह सुनकर मोटा ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा :

'शेठजी, थोड़े दिन मेरा काम देख लें । ठीक लगे तो रख लीजिएगा ।'

व्यापारी ने मोटा को रख लिया ।

उसने मोटा को दूकान में झाडू लगाने का काम सौंपा । दूसरे छुटपुट काम भी सौंप दिये ।

मोटा रोज सुबह जल्दी से उठ जाते । दूकान की चाबी ले जाकर दूकान खोलते ।

सभी झाड़ पोंछकर ठीक से सफाई करते ।

मोटा ने व्यापारी की गद्दी पर चादर देखी । तकिये के गिलाफ आदि देखे ।

ये सभी बहुत मैले थे ।

स्याही के काले दागवाले थे ।

मोटा को छोटे से छोटा काम भी ठीक तरह से करना अच्छा

लगता । इतना ही नहीं मोटा तो व्यापारी का मन जीतना चाहते थे । तो ही शेठ नौकरी पर रखेंगे न?

मोटा रोज चादर, गिलाफ आदि धोते ।

एक भी सिलवट न पड़े इस तरह बिछाते ।

मोटा सब कुछ साफ-सुथरा रखते ।

मोटा जैसे ही दुकान में प्रवेश करते दुकान को भावपूर्वक वंदन करते । कंकू, चावल, फूल नित्य चढ़ाते । मन में शुभ प्रार्थना करते ।

व्यापारी बालक मोटा का व्यवस्थित और सुघड़ काम देखता रहता ।

व्यापारी बहुत प्रसन्न हुआ ।

उसने मोटा को नौकरी पर रख लिया ।

पर वेतन कितना?

मात्र पाँच रुपए महीने ।

उस समय में, इतने भी बहुत कहलाते थे ।

• • •

(१२) मुझसे झूठ का व्यापार नहीं होगा!

मोटा व्यापारी के यहाँ व्यवस्थित हो जम गए ।

व्यापारी सोचने लगा :

‘लड़का छोटा है पर होशियार और मेहनती है । उसमें कार्य कुशलता भी है । जिम्मेदारीवाला काम करे, ऐसा है ।’

इसलिए व्यापारी धीरे-धीरे मोटा को जिम्मेदारीवाला काम सौंपने को तैयार हुआ ।

गाँव से किसान अनाज की गाड़ियाँ लेकर आते ।

व्यापारी ने मोटा को बुलाया और कहा :

'लड़के, तुम्हें अनाज तोलना आता होगा । इन किसानों का अनाज तोलने बैठ जाओ । देखना, ठीकसे तोलना । हमें नुकसान नहीं होना चाहिए । समझे न?'

मोटा किसान का अनाज तोलने बैठ गए ।

मोटा सब का समान रूप से तोलते ।

छोटा हो या बड़ा, सभी का ठीक से तोलते ।

व्यापारी सामान्य रूप से एक मन पर दो-ढ़ाई शेर अधिक अनाज ले लेते।

वे इसे गलत न मानते ।

शेठ को लगा :

'यह लड़का मुझे लाभ हो, ऐसा ही तोलता होगा ।'

फिर भी एक दिन शेठ ने मोटा को बुलाकर कहा :

'लड़के, तुम्हें तोलने का तरीका बताता हूँ । इसे तुम ध्यान से देखो ।'

बाद में व्यापारी मोटा को तोलने का तरीका सिखाने लगा :

तराजू पर बड़ी चालाकी से डंडी मारनी चाहिए ।

सामनेवाले आदमी को इसका पता नहीं चलना चाहिए ।

आसानी से एक मन में दो से ढाई शेर अनाज अधिक आ सकता है ।

व्यापारी ने उस तरीके से तोलकर भी बतलाया।

मोटा ने यह सब शांति से देखा, सुना ।

फिर मोटा तोलने के काम में लग गए ।

पर मोटा ने इस गलत तरीके का उपयोग न किया ।

सही माप के अनुसार ही मोटा अनाज तोलने के काम में लग गये ।

एक दिन एक किसान के मन में शंका हुई ।

'यह लड़का मुझे उल्लू तो नहीं बना रहा है?'

'अधिक अनाज तोल लेता होगा !'

इसलिए वह किसान झगड़ा करने लगा :

'ऐ लड़के, जरा ठीक से अनाज तोल न !'

'इस तरह से अधिक अनाज कैसे ले सकते हो ?'

'क्या हमें बुद्धू समझ रखा है ?'

शोरगुल सुनकर व्यापारी वहाँ दौड़ आया ।

उसने किसान को शान्त करते हुए कहा :

'भाई, क्यों चिल्ला रहे हो ?'

'जो कुछ भी हो मुझे कहो न !'

किसान कुढ़कर बोला :

'लगता है कि यह लड़का जल्दी से अनाज तोलकर अधिक अनाज ले लेता है ।'

'इस प्रकार, आजकल का यह लड़का आँख में धूल झोंक-कर हमें चकमा दे डाले यह कैसे चल सकता है ? यह हराम का माल नहीं है । यह पसीने की कमाई है ।'

व्यापारी मन में घबराने लगा ।

'अरे, मैंने ही इस लड़के को गलत ढंग से अनाज तोलना सिखाया है ।'

'यह किसान अनाज को फिर से तोलने को कहेगा तो भंडा फूट जाएगा । अब क्या होगा ?'

'बेचारा गरीब लड़का झूठा समझा जाएगा ।'

व्यापारी बचाव करने हेतु से गला साफ करते हुए बोला :

'अरे पटेल, तुम तो भले हो । तुम्हारा एक दाना भी हराम का लेना, हम नहीं ले सकते ।'

'यह लड़का ऐसा करे, ऐसा नहीं है । मैं उसे पहचानता हूँ । वह हाथ का साफ है ।'

'जरा भी कम ज्यादा तोले ऐसा नहीं है ।'

'आप क्या, भले ही छोटा लड़का क्यों न आए !'

'सब के साथ ठीक से व्यवहार करे, ऐसा लड़का है ।'

'आप जरा भी शंका न लाएँ ।'

'वजन के अनुसार ही उसने अनाज तोला है ।'

परन्तु किसान एक का दो न हुआ ।

उसने दोबारा अनाज तोलने को कहा ।

व्यापारी का जी घबराने लगा । उसे हुआ :

'बेचारे लड़के ने मेरे कहे अनुसार ही अनाज तोला होगा ।'

'अब क्या होगा ?'

परन्तु मोटा स्वस्थ थे ।

उनके पेट में पाप न था ।

फिर मोटा क्यों डरें ?

अन्य एक आदमी अनाज तोलने बैठा ।

वजन के अनुसार ही अनाज तोला था ।

एक मुट्ठीभर भी अनाज अधिक न था ।

किसान शर्मिंदा हुआ ।

उसे मन में पछतावा हुआ :

'अरे, ऐसे सच्चे लड़के पर गलत ढंग से शंका की ।'

वह किसान गया ।

इसलिए शेठ ने मोटा को नजदीक बुलाया ।

शेठ मोटा को धमका कर कहने लगे :

'तुम तो मेरा दिवाला निकालो ऐसे हो ।'

'व्यवहार करना सीखो ।'

'इस दुनिया में सत्यवादी हरिश्चन्द्र का काम नहीं है ।'

'इसलिए अब जरा होशियार बनो ।'

'मैंने जैसे बताया है वैसे ही तोला करो ।'

मोटा को ऐसा झूठ कैसे अच्छा लगता ?

मोटा ने विनयपूर्वक कहा :

'शेठजी, माफ करना ।'

'मुझ से झूठा व्यापार नहीं होगा ।'

'मेरा मन ना कहता है ।'

किशोर अवस्था के मोटा को पैसों की आवश्यकता थी । पिताजी को सहायक होने की भी इच्छा थी । तब भी मोटा ने नौकरी छोड़ दी ।

• • •

(१३) परायों को अपना बनाया

कालोल गाँव में अंग्रेजी की कक्षा चार तक की ही पाठशाला थी ।

अब मोटा को यदि आगे पढ़ना हो तो गाँव से बाहर जाना पड़े । पिताजी बाहर भेज सके ऐसी स्थिति न थी ।

तब तक कालोल पाठशाला के प्रधान शिक्षक मोटा के सहायक बने ।

उनका नाम घनश्यामराय नटवरराय महेता था । सभी उन्हें घनुभाई कहकर बुलाते थे ।

घनुभाई होशियार विद्यार्थिओं पर स्नेह रखते थे । मोटा होशियार और विनयशील थे ।

'विद्या विनय से शोभा देती है ।'

मोटा सभी का दिल विनय से जीत लेते थे ।

घनुभाई को मोटा की पढ़ाई की चिंता होने लगी ।

इतना सुयोग्य विद्यार्थी पढ़ने के बदले नौकरी की मायाजाल में अटक पड़े, यह उन्हें कैसे अच्छा लगता ?'

घनुभाई ने एक दिन मोटा को बुलाकर पूछा :

'तुम्हें आगे पढ़ने के लिए पेटलाद जाना है ?'

मोटा ने कहा :

'साहब, पढ़ने के लिए मैं कहीं भी जाने को तैयार हूँ ।'

'परन्तु जाऊँ कैसे ? खर्चे की परेशानी है ।'

घनुभाईने उसकी व्यवस्था कर दी ।

उनकी मौसीजी पेटलाद रहती थीं । उनका नाम था प्रभाबा ।

प्रभा मौसी कई बार कालोल आती इसलिए वे मोटा को पहचानती थीं । घनुभाईने मौसी से बात की । प्रभा मौसी मोटा को अपने घर रखने के लिए तैयार हो गयीं ।

प्रभा मौसी गरीबों के प्रति सहानुभूति रखती थीं । आवश्यकता पड़ने पर उन्हें मदद करतीं । मोटा पढ़ने के लिए उनके घर रहने लगे । इससे प्रभा मौसी को बहुत अच्छा लगा ।

विद्यार्थी मोटा सोचने लगे :

'मैं पढ़ाई के लिए गाँव और माता-पिता को छोड़कर यहाँ आया हूँ ।'

'मैं दूसरों के यहाँ रहता हूँ । मुझे किसी पर भी बोझ नहीं बनना चाहिए । इस प्रकार रहूँगा जिससे घर के लोग खुश रहें ।'

मोटा घर के छोटे-मोटे कामों में उमंग से मदद करने लगे ।

वे नौकर के साथ काम करने लगते । रसोइए को भी मदद करते ।

घर के छोटे बच्चों को हँसाते-खेलाते । अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते । साथ ही पढ़ाते भी सही ।

जैसे दूध में मिसरी मिल जाती है, वैसे मोटा कुछ ही दिनों में सभी के साथ हिलमिल गए ।

मोटा का स्वभाव मिलनसार और प्रेमपूर्ण था इसलिए मोटा घर के सदस्य जैसे हो गए, स्वजन बन गए ।

प्रभा मौसी मोटा पर अपने लड़के जैसा ही प्यार करतीं ।

समय जाने पर तो प्रभा मौसी मोटा की 'आध्यात्मिक माँ' बन गयीं ।

पेटलाद हाईस्कूल के आचार्य ईश्वरभाई पटेल थे । वे विद्यार्थिओं के हितों का ठीक से ध्यान रखते थे । गरीब, निराधार, मेहनती विद्यार्थीओ की सहायता करते । पढ़ाई में भी मदद करते ।

ऐसे स्नेही आचार्य मिलने पर मोटा की पढ़ाई अच्छी चलने लगी ।

• • •

(१४) संत ने सहायता की

जानकीदासजी नामक एक संत थे ।

वे यदाकदा पेटलाद आते रहते थे ।

रंगवाला शेठ धार्मिक था, साधु-संतों को चाहनेवाला था । कोई न कोई साधु-संत उनके यहाँ आते ही रहते थे ।

जानकीदासजी भी उनके यहाँ ठहरते थे ।

मोटा महाराज जानकीदासजी के दर्शन के लिए जाते ।

सामान्यरूप से लोग साधु-संतों के दर्शन के लिए जाते, उनका उपदेश सुनते और एक तरफ बैठे रहते ।

मोटा को ऐसा अच्छा न लगता था ।

मोटा महाराजश्री के कमरे को झाड़-पोंछकर साफ करते । उनके कपड़े सूख गए हों तो तयकर उन्हें अपनी जगह ठीक से रख देते । कमरे में वस्तुएँ इधर-उधर पडीं हो तो सभी वस्तुओं को व्यवस्थित कर देते ।

इस प्रकार, मोटा कुछ न कुछ काम करते ही रहते ।

जानकीदासजी यह सब देखते रहते ।

एक दिन जानकीदासजी ने मोटा को अपने पास बुलाकर पूछा :

'लड़के, तुम कहाँ रहते हो ? क्या पढ़ते हो ?'

मोटा ने सन्तजी से अपनी सभी बातें बताईं ।

जानकीदासजी ने सभी बातें ध्यान से सुनी ।

फिर सन्त मोटा के सिर पर हाथ फेरते हुए, पीठ थपथपाकर कहने लगे :

'बच्चे, शांत चित्त से पढ़ाई करना ।'

'मेरे लायक कुछ भी काम हो तो जरा भी संकोच किए बिना कहना ।'

ऐसे करते-करते मोटा मैट्रिक में आए ।

उस समय जानकीदासजी ने मोटा को पास में बुलाकर प्रेम से कहाः

'बेटे, तुम मैट्रिक में हो । सारी पढ़ाई दो महीने में जल्दी से पूरी कर डालना ।'

मोटा ने सन्तजी को हाथ जोड़कर कहा :

'महाराज, यह कैसे संभव होगा ?'

'मैं गरीब हूँ। किसी शिक्षक का ट्यूशन भी कैसे रख सकता हूँ ?'

जानकीदासजी ने प्रेम से कहा :

'बच्चे, तुम जरा भी घबराओ नहीं । मैं इसकी व्यवस्था कर दूँगा ।'

फिर सन्तजीने पाठशाला के शिक्षकों को बुलवाकर कहा :

'इस लड़के को दो महीने में मैट्रिक की सारी पढ़ाई पूरी करवा डालो । कोई भी विषय कच्चा न रह जाए ।'

शिक्षकों ने खास ध्यान देकर उसी अनुसार किया ।

प्रिलिमिनरी परीक्षा में थोड़ा समय बाकी था ।

मोटा अपने बड़े भाई को मिलने अहमदाबाद गए। वहाँ बहुत बीमार पड़ गए । बीमारी लम्बी चली । अंत में ठीक हुए । परन्तु शरीर बहुत ही कमजोर हो गया था ।

डाक्टर ने यह देखकर सलाह दी :

'इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा न दें । पूरा आराम करें । नहीं तो दुबारा बीमारी आ सकती है ।'

मोटा पेटलाद आए। उन्होंने आचार्य से सारी स्थिति बतलाई ।

आचार्यश्री ने मोटा को हिंमत दी और परीक्षा देने की सलाह दी ।

उन्होनें कहा :

'तुमने बहुत जल्दी सारी पढ़ाई पूरी कर दी है । तुम अवश्य अच्छे नंबरो से पास हो जाओगे ।'

इसी दौरान जानकीदासजी पेटलाद आए ।

मोटा ने रोती हुई आवाज में सन्तजी को अपनी स्थिति बताई ।

जानकीदासजी मुस्कराकर स्नेह से बोले :

'अरे, तुम अवश्य पास हो जाओगे ।'

'प्रभु का नाम लेकर परीक्षा दे दो ।'

मोटा ने हिंमतपूर्वक परीक्षा दे दी ।

मोटा अच्छे नंबरो से पास हो गए ।

• • •

(१५) दायित्वपूर्ण कॉलेज-जीवन

मोटा मैट्रिक में बहुत अच्छे अंकों से पास हुए ।

गणित, संस्कृत और गुजराती में सत्तर प्रतिशत से अधिक अंक आए थे ।

पेटलाद की हाईस्कूल में प्रथम आए थे ।

इससे उन्हें इनाम भी मिला था ।

ऐसे आशास्पद विद्यार्थी थे मोटा ।

भगवान की कृपा से मोटा को कॉलेज में जाने के लिए मदद भी मिल गयी ।

मोटा वडोदरा कॉलेज में दाखिल हुए ।

मोटा ने एक आदर्श अपने मन में रखा था ।

'जिनकी आर्थिक राशि की मदद से कॉलेज में पढ़ने का अवसर मिला है, उसका कम से कम उपयोग हो वही अच्छा ।'

'किसीकी मदद का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए ।'

'असुविधा भले ही सहनी पड़े ।'

'पर दूसरों के पैसों से गलत सुविधा नहीं भोगनी चाहिए ।'

'बहुत कंजूसी से रहना है ।'
'भगवान बरकत देंगे ।'
वडोदरा कॉलेज में पढ़ाई का प्रबंध तो हो गया ।
परन्तु रहे कहाँ ?
यह एक बड़ा उलझनवाला प्रश्न था ।
मदद करनेवाले हॉस्टेल में रहने की सुविधा कर देते ।
परन्तु मोटा को ऐसी सुविधा लेनी न थी ।
एक भाई वडोदरा कॉलेज में फेलो हुए थे ।
वे कालोल के नागर थे ।
वे मोटा को अच्छी तरह पहचानते थे ।
उनके मन में मोटा के लिए अच्छा स्नेह था ।
मोटा ने उन से विनती की :
'भाई, मुझ पर दया करो ।'
'मेरी गरीब स्थिति आप जातने ही हैं ।'
'हॉस्टेल का खर्च मुझ से पूरा न होगा ।'
'मुझे आपकी रूम में रहने दें ।'
'मैं कमरे को साफ रखूँगा ।'
'आपका सारा काम करूँगा ।'
'उन्होंने खुश होकर 'हाँ' कह दिया ।'
उनका कमरा होस्टेल में ही था ।
वहाँ से कॉलेज बहुत नजदीक पड़ता था ।

• • •

(१६) डेढ़ आने में भोजन

मोटा वडोदरा कॉलेज में दाखिल हुए । वहाँ उनके रहने की व्यवस्था हो गई ।

अब रहा भोजन का प्रश्न ।

होस्टेल की रसोई में भोजन महँगा था ।

एक महीने का भोजन खर्च तेईस-चौबीस रुपए जितना होता था, उन्हें सहायता करनेवाले सज्जन इतनी रकम अवश्य दे देते ।

परन्तु मोटा ने तो मन में निश्चय कर लिया था :

'प्रभुकृपा हो तो कम से कम खर्च में निर्वाह हो सके वही अच्छा ।'

'मानो कि मुझे पैसों की मदद करनेवाला कोई न होता तो ?'

'इसलिए ऐसी समझ मन में रखते हुए व्यवस्था करूँ उसी में भलाई है ।'

प्रभुकृपा से मोटा को उपाय सूझा ।

वडोदरा शहर के मध्य में मांड़वी विभाग स्थित है । उसकी एक ओर चांपानेर दरवाजा है । उसी ओर जाते हुए वैष्णवों की एक हवेली है ।

बचपन में मोटा उस हवेली में गए थे ।

मोटा को अचानक वह याद आई ।

मोटा ने मंदिर को ढूँढ़ लिया ।

मोटा वहाँ के मुखिया को मिले । पैरो में पड़कर उन्होंने विनती की :

'महाराज, मैं वडोदरा कॉलेज में पढ़ता हूँ ।'

'रोज मुझे भगवान का प्रसाद लेना है ।'

'कृपा करके रोज एक पत्तल प्रसाद दें तो आपका बड़ा उपकार होगा।'

मुखियाजी ने खुशी से हाँ कर दी।

एक पत्तल के प्रसाद की कीमत कितनी ?

मात्र डेढ़ आना।

खाना संपूर्ण शुद्ध। फिर शुद्ध घीवाला।

मोटा रोज सुबह हॉस्टेल से जल्दी निकलते।

ढाई मील जाने के और ढाई मील आने के।

फुटपाथ पर चलते चलते पढ़ते जाते।

मंदिर जाकर मोटा नहा लेते।

एक पत्तल का भोजन लेकर लौटते।

यह था रोज का क्रम।

परन्तु छः-सात महीने बाद इस बात की जानकारी प्रभा मौसी को हुई।

उन्होंने मोटा के भोजन की व्यवस्था कर डाली।

• • •

(१७) सिनेमा देखना बंद किया

कॉलेज की होस्टेल में कुछ विद्यार्थी 'चाय क्लब' चलाते थे।

मोटा उन विद्यार्थीओं को चाय बनाकर देते।

कुछ विद्यार्थी मोटा को छोटा-मोटा काम सौंपते रहते थे।

मोटा उस काम को प्रेम से करते।

मोटा दूसरों का काम करते हुए खुश होते।

ऐसा करने से हम सरलता से उनके दिल में स्थान प्राप्त कर लेते हैं ।

उनके साथ स्नेह सम्बन्ध बंध जाते हैं ।

इसलिए मोटा पढ़ाई के साथ बहुत सारे लोगों का कुछ न कुछ काम करते रहते ।

मोटा सभी का काम आनंद से करते ।

इसलिए सभी विद्यार्थी मोटा के साथ मधुर संबंध रखते । आवश्यकता पड़ने पर खुश होकर मदद करते ।

वे विद्यार्थी कभी-कभी नाटक या सिनेमा देखने जाते ।

तो वे मोटा को कैसे भूलते ? वे उनकी भी टिकिट ले लेते ।

कहीं घूमने जाते तो वहाँ भी वे मोटा को अपने साथ लिए बिना नहीं जाते ।

मोटा उनके साथ जाते भी थे ।

परन्तु उनके उपयोग में आ सके, ऐसी सावधानी भी रखते।

बिना काम की चर्चा या वादविवाद में कभी न पड़ते ।

किसी को मनदु:ख न हो उसका खास ध्यान रखते ।

एक दिन मोटा को अकेले फिल्म देखने का मन हुआ ।

परन्तु अकेले जाना हो तो टिकिट स्वयं निकालनी पड़े ।

मोटा की ऐसी सामर्थ्य न थी । इतने पैसे लाए कहाँ से ?

मोटा ने अपने मन में मंथन किया ।

अंत में मोटा ने संकल्प किया :

'मित्र फिल्म देखने ले जाएँ तब भी नहीं जाऊँगा ।'

'क्योंकि फिल्म देखने की आदत हो जाए तो किसी दिन अकेले जाने का मन भी हो सकता है ।'

'इसलिए सबसे अच्छा उपाय है, सिनेमा देखना बन्द करना ।'

'ऐसे शौक मैं न करूं ।'

• • •

(१८) देश की आजादी के लिए कूद पड़े

कॉलेज की पढ़ाई में मोटा अच्छी तरह व्यस्त हो गए थे ।

मोटा बी.ए. के अंतिम वर्ष में आ गए ।

मोटा ने मन में सोचा :

'चलो, यह वर्ष प्रभुकृपा से सरलता से निकल जाए तो अच्छा ।'

'बी. ए. तो हो जाऊँगा ।'

'अच्छी नौकरी मिल जाएगी ।'

'घर में मददगार हो जाऊँगा ।'

'माँ की तकलीफें दूर होंगी ।'

'सुख के दिन आएँगे ।'

वहीं एक बड़ी घटना घटी ।

महात्मा गाँधीजी देश की आजादी के लिए सत्याग्रह आंदोलन चला रहे थे ।

गाँधीजी ने युवकों को सरकारी कॉलेजों का बहिष्कार करने का आह्वान किया ।

मोटा ने भी देश की स्थिति देखकर सोचा :

'अब कॉलेज में पढ़ना निरर्थक है ।'

'देश का काम देश के युवक न करें तो दूसरा कौन करेगा ?'

अंग्रेज सरकार का दमन बढ़ता जा रहा था ।

देश के वातावरण में आक्रोश अधिक था ।

परन्तु मोटा का कॉलेज छोड़ देना इतना आसान न था ।

जीवन में जो कुछ बनने का स्वप्न देखा था और जो अरमान रखे थे, वे सभी टूटकर चकनाचूर हो जानेवाले थे ।

कुटुम्ब के सभी सदस्य मोटा पर बड़ी बड़ी आशाएँ रखते थे ।

फिर मोटा को जो सज्जन सहायता करते थे, वे चाहते थे कि मोटा कॉलेज में ठीक से पढ़कर बाहर आएँ ।

मोटा इन सभी की नाराजगी नहीं लेना चाहते थे । इससे उन्हें दु:ख भी बहुत होता था ।

मदद करनेवाले सज्जन उन्हें समझाने लगे :

'भाई, तुम आवेश में आकर यह सब कर रहे हो ।'

'तुम बरबाद हो जाओगे और तुम्हारा कुटुम्ब भी बरबाद होगा । वे बेचारे तुम पर आधार रखते हैं । इस विषय में तुम शांति से सोचो ।'

'सोचो तुम आगे क्यों पढ़ना चाहते थे, इसका भी जरा विचार करो । तुम्हारे सारे सपने नष्ट हो जाएँगे ।'

'यह आवेश दो-तीन साल में शान्त हो जाएगा । तब तक तुम पढ़ लो । पढ़ने के बाद तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना ।'

मोटा के सामने बड़ा धर्मसंकट आ पड़ा ।

मोटा साथ ही मन में सोचते :

'अब जीवन का प्रवाह मुझे किसी दूसरी दिशा में ले जा रहा है ।'

'देश की सेवा करना भी हमारा धर्म है । इसमें हमारे जैसे कितने ही युवकों ने बलिदान दिया होगा ।'

'देश की स्वतंत्रता दिलाने का काम हम जैसे युवकों को ही करना है । दूसरा कौन करेगा ?'

मोटा की सोच कॉलेज-त्याग करने की ओर अधिक से अधिक बढ़ती जा रही थी । मोटा ने मन को बार-बार चेतावनी दी :

'भाई, इसमें कूद पड़ोगे फिर क्या ? बाद में दिन बहुत कष्टपूर्ण होंगे ।'

'शायद खाना भी न मिले । कोई मदद भी नहीं करेगा और मदद की आशा रखना भी गलत है ।'

'अब तो यह बात निश्चित है कि स्वयं के बल पर जीना है ।'

'इसलिए हे मनवा ! बार-बार इस विषय में कृपा करके सोच ले ।'

वातावरण में बहुत उत्तेजना थी । कॉलेज के युवा विद्यार्थीयों में उत्तेजना थी । पढ़ाई करने की बात किसी को न सूझती थी।

इस प्रकार आजादी के प्रबल तूफान में अनेक विद्यार्थीयों ने कॉलेजों का त्याग किया ।

उनमें से बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ने में बहुत तेजस्वी थे । उनका भविष्य उज्ज्वल था । परन्तु देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार थे ।

मोटा ने भी वडोदरा कॉलेज का बहिष्कार किया ।

उनके साथ वडोदरा कॉलेज का त्याग करनेवाले दूसरे विद्यार्थी थे श्री पांडुरंग वळामे ।

वे भविष्य में श्रीरंग अवधूत के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

सर्वप्रथम वडोदरा कॉलेज को छोड़कर असहकार आंदोलन में कूदनेवाले ये दो ही विद्यार्थी थे ।

श्रीमोटा और श्रीरंग अवधूत ।

• • •

(१९) नामस्मरण का चमत्कार

आगे चलकर मोटा हरिजन सेवा का कार्य करने में जुट गये ।

मोटा मानते थे :

'हमने वर्षों से बेचारे हरिजनों की अवगणना की है ।'

'उन्हें धुत्कारा है ।'

'पशु-पक्षी से भी हीन समझा है ।'

'उन्हें छूने में भी पाप समझते आए हैं ।'

'इसलिए उच्च वर्ण द्वारा किए गए अनिष्टों का हमें प्रायश्चित करना चाहिए ।'

'अतएव हरिजनों की प्रेम से सेवा करनी चाहिए ।'

मोटा नडियाद में हरिजनों की सेवा करते थे, उसी दौरान उन्हें मिरगी आने लगी ।

जिससे मोटा दो बार नर्मदा तट पर आराम करने गए ।

मोखडी घाट के पार रणछोड़जी का मंदिर है । मोटा कुछ समय वहाँ रहे ।

मंदिर में रहनेवाले साधु महात्माओं की मोटा सेवा सुश्रुषा करते ।

एक बार मोटा को वहाँ मिरगी आई ।

यह देख महात्मा ने उन्हें कहा :

'बेटा, भगवान के नाम 'हरि:ॐ' का सतत स्मरण करते रहो।'

'तुम्हें पीड़ा देनेवाला यह दर्द मिट जाएगा ।'

मोटा को उन दिनों ऐसी बातों में श्रद्धा न थी । इसलिए उन्होंने उस बात को महत्त्व न दिया ।

एक बार मोटा प्रभा मौसी को मिलने वडोदरा गए ।

वहाँ एक बार अचानक मोटा को मिरगी आयी ।

मोटा मकान की तीसरी मंजिल की सीड़ियों से गिर पड़े । लुढ़कते लुढ़कते वे फर्स पर गिर पड़े ।

वहाँ उन्हें नर्मदा तट पर मिले महात्मा के दर्शन हुए ।

महात्मा ने मोटा से कहा :

'अरे, भगवान का स्मरण 'हरिः ॐ' तो करके देख । उसमें तुम्हारा क्या जाता है ? उसमें तुम्हारे कौन-से पैसे जा रहे हैं ?'

'श्रद्धा रख । भगवान का नामस्मरण 'हरिः ॐ' कर के तो देख ।'

मोटा ने यह बात प्रभा मौसी को कही ।

यह सुनकर प्रभा मौसी बोल उठी :

'यह तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात है ।'

'समझदारी से मन में शंका-कुशंका करना छोड़ दे ।'

'भगवान का स्मरण लगातार करते रहो ।'

'उठते-बैठते, घूमते-फिरते, खाते-पीते सभी काम करते-करते भगवान के नाम का स्मरण किया करो ।'

'महात्मा ने कहा है तो तुम्हारा यह रोग अवश्य मिट जाएगा ।'

मोटा को प्रभा मौसी की बात सच्ची लगी ।

उन्हें मिरगी मिटाने की बड़ी जरूरत थी । इस रोग को मिटाने के लिए मोटा 'हरिः ॐ' का जाप करने लगे ।

मोटा निष्ठापूर्वक व्यवस्थित नामस्मरण करने लगे ।

धीरे-धीरे नामस्मरण का समय बढ़ाते गए ।

बढ़ाते-बढ़ाते नित्य चार घण्टे के अलावा भी नामस्मरण करने लगे ।

अंत में प्रभुकृपा से मिरगी का रोग मिट गया ।

नामस्मरण के विषय में मोटा कहते है :

'इस समय के दौरान भगवान का स्मरण करते करते मुझे लगता था कि उत्साह, उमंग, निष्ठा, उद्यम आदि प्राप्त होते जा रहे थे ।'

'एक ओर रोग मिटा और दूसरी तरफ गुण बढ़ने का अनुभव हुआ । इससे दिल में दिल से दुगुना प्रोत्साहित होकर श्रीहरि का स्मरण बढ़ता गया ।'

'श्रीप्रभुकृपा से दिल में दिल से जीवन के ध्येय की चेतना जाग गई थी ।'

'जीवन में अब यही एक कर्म प्रभुप्रीति के लिए करना है, ऐसी चेतना मेरे दिल में उस समय समा गई थी ।'

• • •

(२०) सद्‌गुरुओं का समागम

सामान्यरूप से मनुष्य सद्‌गुरु की खोज में सारी जिन्दगी भटकते हैं पर उन्हें सद्‌गुरु नहीं मिलते है ।

प्रभुकृपा से मोटा को सद्‌गुरु ही खोजते हुए आए ।

मोटा नडियाद में हरिजन कार्य करते थे ।

साथ ही अपनी सूझ के अनुसार आध्यात्मिक साधना भी करते थे ।

'हरिः ॐ' का जाप लगातार चलता रहे, इसकी सावधानी रखते । आर्तभाव से जाप करते ।

निर्भयता प्राप्त करने के लिए मोटा रात में स्मशान जाकर अकेले सो जाते ।

मोटा दिन को अधिकतर मौन रखते । आवश्यकता से अधिक न बोलते । चर्चा या वादविवाद में न पड़ते ।

नामस्मरण, प्रार्थना, भजन आदि किया करते ।

अपनी इस साधना का किसी को भी पता न लगने देते ।

पूरे दिन हरिजनसेवा का काम भी उतने ही उत्साह से करते ।

उसी दौरान उन्हें श्रीबालयोगी महाराज का समागम हुआ ।

श्रीबालयोगीजी ने मोटा को वसंत पंचमी के शुभ दिन दीक्षा दी ।

दीक्षा देने के बाद श्रीबालयोगीजी ने कहा :

'लड़के, तुम्हारे गुरु महाराज तो श्रीकेशवानंदजी धूणीवाले दादा हैं ।'

'उन्होंने मुझे यहाँ तुम्हे दीक्षित करने के लिए भेजा है ।'

'उनके पास जा । उनके आशीर्वाद ले । वे जो आदेश दें उसके अनुसार आचरण करो ।'

मध्यप्रदेश में ईटारसी के पास सांईखेड़ा नामक स्थान है । वहाँ धूणीवाले दादा रहते हैं ।

मोटा धूणीवाले दादा के पास गए । थोड़े दिन वहाँ रहे ।

अंतिम दिन गुरुमहाराज ने मोटा को आदेश देते हुए कहा :

'तुम अपने घर जाओ । तुम मेरी प्रार्थना करते रहना ।'

'जहाँ रहो वही काम करो । प्रभुप्रीति के लिए ही – प्रभु के लिए ही तुम्हें काम करना है । दूसरे किसी के लिए नहीं ।'

'भगवान के प्रति तुम्हारा भाव जागे, यह बहुत आवश्यक है ।'

फिर तो साकोरी के श्रीउपासनीबाबा, शिरड़ी के श्रीसांईबाबा भी मोटा को साधना मार्ग प्रदान करने हेतु प्रत्यक्ष पधारे थे ।

● ● ●

(२१) अखन्ड नामस्मरण

नामजप की उच्च स्थिति है – अखण्ड नामस्मरण ।

मोटा उस स्थिति में कैसे पहुँचे ईस प्रसंग को देखें ।

मोटा प्रार्थना, स्तवन, भजन, ध्यान, धारणा, नामस्मरण आदि करते थे ।

अधिक से अधिक पुरुषार्थ द्वारा मोटा दिन के १६ घण्टे नाम का जाप करने लगे ।

मोटा ने उत्साह से प्रयत्न जारी रखा । परन्तु अखण्ड नामस्मरण तक वे नहीं जा सके ।

उसी दौरान खेड़ा जिल्ले के बोदाल गाँव में हरिजन बालकों के लिए आश्रम स्थापित किया था । मोटा खेत में वहाँ रात के समय सो रहे थे ।

रात को एक जहरीले साँप ने मोटा की जाँघ में काट लिया ।

मोटा के दिमाग में जोरदार झटका लगा ।

उस समय मोटा को गाँधीजी का एक लेख याद आ गया :

'जिसे साँप काटा हो, उसे बेहोश नहीं होने देना चाहिए । उसे जागृत रखना चाहिए । इसके लिए उसे मारना पड़े तो भी उसे हिंसा नहीं मानना चाहिए ।'

इसलिए मोटा ने सोचा :

'मुझे साँप ने काटा है । इसलिए किसी भी हिसाब से मुझे जागृत रहना चाहिए ।'

मोटा जोर जोर से 'हरि:ॐ' का जाप जपने लगे । कोई पूछे तो उसका उत्तर मोटा न देते । बस जाप करते रहते ।

जहर उतारने के लिए मोटा को दो-तीन गाँवो में ले जाया गया । परन्तु कुछ भी परिणाम न आया ।

इसलिए आणंद में डॉ. कूक के दवाखाने में मोटा को ले गए ।

डॉ. कूक ने जठर से जहर निकाल लिया । उनकी जाँच करते डॉ. कूक चकित हो बोल उठे :

'यह लड़का मात्र ईश्वर के स्मरण से बच गया है ।'

'जहर बहुत ही कातिल है । प्रभुकृपा के बिना नहीं बचा जा सकता है ।'

मोटा ने ७६ घण्टे तक लगातार नामस्मरण किया था । इस प्रकार सर्पदंश मोटा के लिए बड़ा उपकारक हुआ ।

मोटा का नामस्मरण अखण्ड रूप से चलने लगा ।

• • •

(२२) हरि ने लाज रखी

मोटा की एक मौसी थी । उनकी स्थिति अच्छी थी ।

मोटा के बड़े भाई गंभीर बीमारी की चपेट में आ गये । उस समय मौसी के पास से दो-तीन बार पैसे लिए थे ।

परन्तु मोटा की इतनी आय न थी, इसलिए उस रकम को वे नहीं भर पाये ।

मोटा रोज घर से हरिजन पाठशाला में पढ़ाने जाते ।

उन दिनों रास्ते पर चलते हुए मोटा ऊँचे स्वर में कोई न कोई भजन गाते ।

एक दिन मोटा पाठशाला में जाते हुए गा रहे थे :

'हरि ने भजतां हजु कोई नी लाज,
जती नथी जाणी रे....'

(हरि को भजते हुए किसी की भी लाज जाते हुए नहीं सुना है ।)

रास्ते में मौसी का घर पड़ता था ।

मोटा की आवाज सुनकर मौसी बाहर आयी । मौसी जोर से चिल्लाकर बोली : 'अरे चूनिया, अब मेरे पैसे बापिस कब करेगा? कितने सारे दिन हो गए । तुम्हें कुछ चिन्ता है ?'

मोटा ने मौसी को देखते हुए कहा :

'मौसी, अब जैसे बनेगा वैसे ही तुम्हारे पैसे लौटा दूँगा । चिन्ता न करना ।'

इसी प्रकार कभी कभार मौसी मोटा को टोका करती और मोटा शान्ति से उत्तर देते ।

मौसी वादा सुन सुनकर उकता गयी । एक दिन उन्होंने निश्चय किया : 'यह चूनिया रोज कोई न कोई बहाना बनाता रहता है । आज उसकी आ बनी ।'

'रास्ते पर खड़े होकर उसे ठीक से झाड़ूँगी । वह इसी लायक है ।'

उस दिन मोटा प्रतिदिन की तरह उस रास्ते से निकले । वही भजन गा रहे थे :

'हरि ने भजतां हजु कोई नी लाज...'

आवाज सुनकर मौसी बाहर रास्ते पर दौड़ी आयीं ।

मोटा का रास्ता रोककर चिल्ला उठीं :

'ओ साधू, अब तुम्हारा ढोंग नहीं चलेगा ! इस प्रकार के गलत वायदे देते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

'आज यदि तुम मुझे पैसे वापिस नहीं करोगे तो तुम्हें यहाँ से नहीं जाने दूँगी ।'

'आज तुम्हारी खूब फजीहत करूँगी ।'

इस प्रकार मौसी अनापसनाप बोलने लगी ।

मोटा धीरज से सुनते रहे । उन्होंने मौसी को प्रेमपूर्वक कहा, 'मौसी, मौसी, शान्त हो जाइए । आप कहाँ परायी है । आप हमारे घर की स्थिति जानती ही हो । मैं बहुत लाचार हूँ ।'

'मुझे भी बार बार वायदा करते हुए बहुत शर्म आती है । पर क्या करूँ, मौसी ?'

परन्तु मौसी का पारा चढ़ता ही गया । मौसी ने खूब आड़े हाथों लिया ।

मोटा ने सोचा :

'मौसी क्रोध से भरी हुई है । इस समय मौन रहना ही अच्छा है ।'

मोटा चुपचाप सिर झुकाकर सुनते रहे ।

सुबह का समय । लोगों का आनाजाना प्रारंभ हो गया था।

मौसी की चिल्लाने की आवाज सुनकर लोग तमाशा देखने इकट्ठे होने लगे ।

सभी को मुफ्त में मौसी-भानजे का झगड़ा देखने का आनंद आया ।

अन्त में मोटा ने मौसी के पैरों पड़कर कहा :

'मौसी, मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ । कुछ समय दो ।'

'दो, चार दिन में तुम्हें किसी भी हिसाब से पैसे चुका दूँगा।'

'मुझे पाठशाला में पहुँचने की देर हो रही है । विद्यार्थी मेरी राह देख रहे होंगे ।'

'दया करके मुझे जाने दो ।'

मौसी रुखाई से कहने लगी :

'ठीक है जा । दो-चार दिन में नहीं दिए तो तुम्हारी फजीहत किए बिना नहीं रहूँगी । समझे न ?'

रास्ता खुलते ही मोटा पाठशाला में गाते हुए जाने लगे :

'हरि ने भजता हजु कोईनी लाज....'

मोटा उस दिन पूरे समय बहुत ही बैचेन रहे ।

काम में दिल न लगता था ।

हरि की वे आर्तभाव से प्रार्थना करते रहते :

'हे प्रभु ! तुम दयालु हो । मेरी लाज रखना ।'

'हे परमात्मा ! तुमने अनेक भक्तों की लाज रखी है । मुझे इस समय सहायता करना ।'

'हे मेरे नाथ ! मैं बहुत लाचार हूँ ।'

इस प्रकार मोटा ने दो-तीन दिन तल्लीन हो प्रार्थना में गुजारे। तब तक मोटा को एक मनीऑर्डर मिला ।

मौसी जितनी रकम माँगती थी, उतनी ही रकम डाक में आयी थी ।

मनीऑर्डर मिलते ही मोटा गद्‌गद हो गए ।

भगवान ने अंत में लाज तो रख ही ली ।

मोटा दौड़ते-दौड़ते गए और मौसी का सारा कर्ज चुका दिया।

• • •

(२३) दिल जीत लेनेवाला नौकर

मोटा किसी को पता न लगे इस तरह अपनी साधना करते थे ।

वैसे तो वे हरिजन सेवा का काम भी करते थे ।

मोटा उस समय हर साल एक महीने की छुट्टी लेते ।

मोटा किसी एकान्त स्थान पर जाते । वहाँ गुरु महाराज के आदेश अनुसार साधना करते थे ।

जबलपुर के पास नर्मदा नदी पर धूवाँधार नाम की जगह है।

मोटा एक बार वहाँ साधना करने के लिए निकले ।

इतने में गाड़ीं में उनकी जेब कट गयी । साथ में जो रकम थी सारी चली गयी ।

अब क्या होगा ?

मोटा को रास्ता मिल गया ।

वे जबलपुर में एक गुजराती व्यापारी की दुकान पर गए ।

जेब कटने की बात कर मोटा ने उनसे कहा :

'शेठजी, मुझे इतनी रकम प्राप्त करने के लिए थोड़े दिन नौकरी करनी होगी । कोई कामकाज हो तो देने की कृपा करें ।'

व्यापारी ने मूछों पर हाथ फिराते हुए कहा :

'मेरे पास अभी कोई काम नहीं है ।'

'पर हाँ, तुम घर का काम करने के लिए तैयार हो?'

'बर्तन माँझने पड़ेंगे ।'

'कपड़े धोने होंगे ।'

'ऐसे सभी घर के काम कर पाओगे ?'

मोटा तुरन्त बोले :

'ऐसा काम करना मुझे पसंद है । मैं खुश होकर करूँगा ।'

शेठ ने खुश होकर घर में खबर दी :

'हमें नया नौकर मिल गया है । मैं उसे घर भिजवा रहा हूँ। उसे काम सौंपना । कैसा काम करता है, उसे देखना । ठीक लगेगा तो रखेंगे ।'

मोटा को शेठ ने घर भेजा ।

शेठानी ने ढेर सारे बर्तन माँजने के दिए ।

बचपन में मोटा ने ऐसा काम किया था । इसलिए बर्तनों को अच्छी तरह माँजकर किस तरह साफ करना है, यह उन्हें आता था ।

मोटा ने तुरन्त बर्तन माँझ दिए ।

धोकर धूप में सुखाने रख दिए ।

चौकड़ी ठीक से साफ कर दी ।

बर्तन अच्छी तरह मँजे थे । धूप में चमक रहे थे ।

शेठानी ने दूर से बर्तन देखे । यह देखकर वह बहुत खुश हो गयी ।

शेठानी ने सोचा :

'वाह ! वाह ! अच्छा नौकर मिल गया ।'

फिर मोटा को गट्ठर भरकर कपड़े धोने को दिए ।

मोटा को कपड़े धोने भी अच्छे आते थे ।

मोटा ने कपड़ो को तीन विभागों में बाँट दिया ।

सबसे कम मैले, जरा अधिक मैले और सबसे ज्यादा मैले।

साबुन के पानी में सभी को अलग-अलग भिगोया ।

फिर सबसे कम मैले कपड़े पहले धोए ।

उसके बाद जरा अधिक मैले कपड़े धोए ।

अंत में बहुत मैले कपड़े घिसकर और मसलकर ठीक से धोए।

सारे कपड़े अच्छी तरह धोकर-निचोड़कर धूप में सुखाने डाले ।

बगुले की पंख जैसे साफ कपड़े देखकर शेठानी खुश हो गयी ।

शेठ दिन में भोजन करने आए । शेठानी ने नौकर की बहुत प्रसंशा करते हुए कहा :

'इस तरह हाथ का साफ नौकर जिन्दगी में पहली बार देखा। क्या उसका काम है ?'

रात को खा-पीकर, बर्तन माँजकर, चौकड़ी धोकर मोटा निपट गए ।

तब तक बिस्तर लगाने का समय हो गया ।

प्रत्येक बिस्तर को इतने अच्छे ढंग से लगाया कि देखनेवाले खुश हो गए ।

बिस्तर पर की चद्दर ठीक से खींचकर लगायी । कहीं भी थोड़ी सी भी सिलवट न दिखी ।

रात को थोड़ा-सा समय मिलता ।

उस समय मोटा घर के बच्चों को इकट्ठा करते, रामायण, महाभारत की बातें करते ।

बालक भी खुश-खुश हो जाते ।

रात को सभी सो जाते ।

तब मोटा बिस्तर में बैठे-बैठे नामस्मरण करते ।

हरि का स्मरण करते-करते मोटा सो जाते ।

पूरे दिन उमंग से काम किया हो, इसलिए एक ही नींद में सुबह हो जाती ।

फिर मोटा घर के कामों मे जुट जाते ।

थोड़े दिनों में मोटा को जितनी रकम चाहिए थी, उतनी मिल गई ।

मोटा शेठ से छुट्टी लेने गए ।

मोटा का इतना सुघड़ और साफ काम देखकर शेठ को लग रहा था :

'यह आदमी गरीब मजदूर नहीं है ।'

'पैसों की कमी के कारण ही यह काम करने को तैयार हुआ होगा ।'

शेठ ने कुतूहल होकर कहा :

'भाई, तुम नौकर की तरह नहीं लगते हो ।'

'तुम आए तबसे तुम्हारा काम हम देखते आए हैं ।'

'नौकर आदमी को इतनी सारी सोच-समझ सामान्यरूप से नहीं होती ।'

'तुम मुझसे खुलकर बात करो । जिससे मुझे समझ आए ।'

मोटा ने नम्रभाव से सारी बात कही ।

यह सुनकर शेठ सोचने लगे :

'अरे ऐसे भगत आदमी के पास घर का काम करवाया ।'

'प्रभुभजन के थोड़े दिन गँवाए ।'

फिर मोटा शेठ-शेठानी से छुट्टी लेकर धुवाँधार जाने निकल पड़े ।

शेठ-शेठानी मोटा को अहोभाव से देख रहे थे ।

• • •

(२४) चोर ने गहने लौटाए

सिंधिया नेविगेशन कंपनी के मैनेजर परसदभाई कराँची में रहते थे ।

मोटा उनके यहाँ कराँची में थे ।

परसदभाई की दो बेटियाँ : कुरंगीबहन और चित्राबहन ।

ये दोनों बहनें बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी में परीक्षा देने जाने के लिए तैयार हुईं ।

इतने दूर दोनों बेटियों को अकेली भेजने के लिए परसदभाई तैयार न थे ।

उन्होंने मोटा को अपनी बेटियों के साथ बनारस जाने को कहा । इसलिए मोटा उन दोनों बहनों की देखभाल करने बनारस गए ।

एक समय ये दोनों बहनें बाहर घूमने गईं और अपने गहने निकालकर मोटा को संभालने दे गयीं ।

मोटा ने उन गहनों को कुरते की जेब में रख दिया ।

कुछ घण्टों बाद मोटा उन बहनों के साथ काशी विश्वनाथ के मंदिर में महादेवजी के दर्शन करने गए । मंदिर में बहुत भीड़

थी । उस भीड़ में रास्ता निकालते-निकालते वे अंदर दाखिल हुए । दर्शन करके घर वापिस आए । दूसरे दिन गंगा नदी में नौकाविहार करने जाने का प्रबंध किया ।

मोटा कपड़े बदलने लगे । पहने हुए कुरते की जेब से नए कुरते की जेब में रखने के लिए जेब को टटोलने लगे ।

उस समय मोटा को पता चला कि, कुरते की जेब तो कट गयी है । गहनोंकी चोरी हो गई है ।

मोटा ने विचार किया :

'मेरे भरोसे जो रखा हो उसकी जिम्मेदारी मेरी है । अब जो भगवान करे वह सही ।'

मोटा ने बहनों से बात की ।

बहनों ने उस बात को बहुत महत्त्व न दिया । मोटा को इस घटना को भूल जाने को कहा ।

परन्तु मोटा का मन कचौटता था । मन में बहुत अफसोस होने लगा ।

बहनें और मोटा नौकाविहार के लिए गंगाजी के किनारे गए।

नौका में बहनों की एक सखी भजन गाने लगी ।

भजन सुनते-सुनते मोटा भावावेश में आ गए । बाह्य चेतना चली गई ।

इस स्थिति में मोटा को एक दृश्य दिखाई दिया ।

विश्वनाथ मंदिर में किसने और कब जेब काटी, वह सारा दृश्य ज्यों का त्यों दिखाई दिया ।

इसलिए मोटा भावावेश की स्थिति में ही बोले :

'अरे, यह गहने मेरे नहीं है ।'

'बहनों ने मुझे संभालने के लिए दिए हैं ।'

'मैं तो गरीब आदमी हूँ । मैं भरपाई कर सकूँ ऐसा नहीं हूँ। इन गहनों को तुम हजम नहीं कर पाओगे । तुम मुझे वापिस कर दो ।'

'मेरे रहने का अमुक ठिकाना है ।'

'सुबह परीक्षा का अमुक समय होने से आधा पौना घण्टा मैं हिन्दू युनिवर्सिटी के अमुक स्थान पर जाता हूँ ।'

यह सब ध्यान की अवस्था में हुआ ।

दूसरे दिन बहनों की परीक्षा थी । जिस मकान में परीक्षा ली जानी थी, वहाँ मोटा दूसरी मंजिल पर खड़े थे ।

कुरंगीबहन की एक सखी के साथ मोटा बाहर के बरामदे में खड़े बातें कर रहे थे ।

उस समय एक व्यक्ति दूर से हाँफता-हाँफता दौड़ते हुए आते दिखा ।

वह व्यक्ति मोटा को हाथ हिलाकर बुलाने लगा ।

'भाई साहब ! मेहरबानी करके नीचे आओ ।'

मोटा नीचे आए और उस व्यक्ति से मिले ।

उस व्यक्ति ने हाँफते-हाँफते मोटा से कहा :

'तुम्हारे इन गहनों को वापिस ले लो ।'

'मेरा पूरा शरीर इतना सारा जल रहा है कि मैं उसकी जलन सहन नहीं कर पा रहा हूँ ।'

'भाई साहब, मेहरबानी करके वह मिट जाए ऐसा करो ।'

प्रभु की कृपा का यह कैसा चमत्कार !

मोटा का हृदय भाव से गद्‌गद हो उठा ।

गहने वापिस मिल जाने से मोटा को बहुत राहत मिली ।

उस व्यक्ति ने मोटा के पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहाः

'भाई साहब, मेरा यह भयंकर दाह मिटाओ ।'

मोटा ने उससे कहा :

'भाई, यह तो मेरे प्रभु का सारा चमत्कार है ।'

'तुम कैसे जान पाए कि ये गहने मेरे हैं और मैं यहाँ हूँ ?'

उस व्यक्ति ने कहा :

'कल शाम से मुझे अचानक पूरे शरीर में ऐसी भयानक जलन होने लगी कि वह मुझसे सहन नहीं होती ।'

'इसी दौरान तुम्हारा चहेरा बार-बार नजरों के सामने तैर जाता था ।'

'तुम कहाँ रहते हो उस जगह का मुझे पता चल गया था ।'

'फिर सुबह तुम कहाँ हो, यह भी मैं देख पा रहा था । रात में आने की मुझ में शक्ति न थी और अभी भी नहीं है ।'

'पर जैसे-तैसे आ सका हूँ । निकलने लगा तो लगा कि नहीं चल पाऊँगा । पर फिर इतनी अधिक तेजी आ गई कि दौड़ना ही शुरू कर दिया और एक ही साँस में यहाँ आ गया हूँ ।'

'इसलिए कृपा कर इस जलन को मिटाओ ।'

मोटा ने उसे सहज भाव से कहा :

'भाई, तुम अब एक व्रत लो ।'

'विश्वनाथ के मंदिर में आनेवाले दर्शनार्थियों की जेब नहीं काटोगे ।'

'यदि तुम इस वचन का संपूर्ण पालन करने को तैयार हो तो प्रभुकृपा से तुम्हारे शरीर की दाह अवश्य मिट जाएगी ।'

'कोई बेचारा मेरे जैसा गरीब व्यक्ति महादेवजी के दर्शन करने आए और उसकी जेब कट जाए तो उसके हाल कैसे होंगे।'

'इसलिए कृपा कर मंदिर में किसी का जेब न काटने का दृढ़ निश्चय करो ।'

उस व्यक्तिने मोटा के पैरों में पड़कर माफी माँगते हुए गद्‌गद कंठ से कहा :

'भाई साहब ! भूख से मर जाऊँगा पर मंदिर में किसी की जेब न काटूँगा । इतना ही नहीं जेब कतरने का काम ही छोड़ दूँगा।'

कुछ देर में ही उस व्यक्ति का दाह मिट गया ।

वह भक्तिभाव से मोटा के पैरों में पड़कर चला गया ।

पराये गहने प्रभुकृपा से वापिस मिल गए ।

इसलिए मोटा श्रीहरि को मन ही मन में नमन करके आभार मानने लगे ।

• • •

(२५) हरिः ॐ आश्रम

मोटा नामस्मरण पर बहुत भार देते थे ।

भगवान का नाम हमें उठते-बैठते, सोते-जागते, काम करते-करते लेते ही रहना चाहिए ।

ऐसा करने से हमारा मन अधिक से अधिक शुद्ध, प्रभुमय होता जाता है । चित्तशुद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है ।

मन ही हमारे जीवन को मार्ग दिखाता है ।

मनुष्य को बाँधनेवाला भी मन है ।

इसलिए मन को प्रभुपथ की ओर, सन्मार्ग की ओर मोड़ने के लिए नामस्मरण ही श्रेष्ठ उपाय है ।

इस युग में मनुष्य संसार में रहकर अपने जीवन को अच्छा बना सकता है।

इसके लिए वन में जाने की आवश्यकता नहीं है ।

हिमालय में जाने की आवश्यकता नहीं है ।

बहुत तपस्या करने की भी आवश्यकता नहीं है ।

नाम का जाप ही आज के जमाने में आत्मविकास करने का श्रेष्ठ साधन है ।

मोटा नामस्मरण के विषय में कहते हैं :

'नामस्मरण के लिए विशेष शास्त्र जानने की आवश्यकता नहीं है ।'

'विशेष प्रकृति जानने की भी आवश्यकता नहीं है ।'

मुख्य बात तो यह है कि –

'जब से दिल में श्रीहरि का नाम लेने की प्रेरणा हो, तब से ही जैसा आता हो वैसा लेने की शुरूआत कर देनी चाहिए ।'

'भले किसी को रुढ़िगत लगे । तब भी वह हमारे लिए लाभदायक रहेगा ।'

नामस्मरण निरंतर करना चाहिए ।

उसके लिए-घरसंसार में चाहिए वैसी सरलता सामान्यरूप से प्राप्त नहीं हो पाती ।

उसके लिए तो किसी एकान्त स्थान पर जाना पड़ता है ।

परन्तु सभी के लिए ऐसा करना संभव नहीं है ।

ऐसे मनुष्यों के लिए मोटा को श्रीगुरु महाराज की तरफ से आदेश मिला ।

मोटा को मौनमंदिर शुरू करने की प्रेरणा मिली ।

गुजरात में मोटा के दो मुख्य हरि:ॐ आश्रम है :

एक नडियाद में – बिलोदरा गाँव की स्मशानभूमि शेढी नदी के किनारे ।

दूसरा आश्रम है – सूरत में जहाँगीरपुरा, कुरुक्षेत्र स्मशानभूमि के पास, तापी नदी के किनारे ।

इन हरि:ॐ आश्रमों में मौनमंदिर हैं ।

मौन के इन विशेष कमरों में 'जाप का यज्ञ' (जपयज्ञ) करने की पूरी सुविधाएँ हैं ।

कभी हरि:ॐ आश्रमों को देखने अवश्य जायें ।

वहाँ की मौन सेवन व्यवस्था समझने जैसी है ।

• • •

(२६) श्रीमोटा का अनोखा कार्य

एक दिन मोटा नडियाद के हरि:ॐ आश्रम में वटवृक्ष के नीचे बैठे थे ।

उस समय श्रीगुरुमहाराज ने दर्शन देकर कहा :

'तुम समाज के लिए कुछ काम करो ।'

'यों बैठे रहने का क्या मतलब है ?'

मोटा ने श्रीगुरुमहाराज को प्रणाम करके पूछा :

'गुरुमहाराज, मैं क्या काम करूँ?'

श्रीसद्गुरु ने उत्तर दिया :

'समाज से एक करोड़ रुपया इकट्ठा करो ।'

'फिर समाज को वापिस दे दो ।'

'पर काम मौलिक करो ।'

मोटा ने श्रीगुरुमहाराज से पूछा :

'मुझे कौन देगा ?'

गुरुमहाराज ने कहा :

'तुमसे यह काम होगा ।'

'तुम्हारे साथ मेरी सहायता है ।'

आदेश का पालन करना यह तो मोटा के स्वभाव में ही था।

सन् १९६२ से मोटा ने काम करना शुरू किया ।

'समाज को आत्मनिर्भर करने का काम ।'

इस प्रकार चौदह वर्ष तक मोटा जनसमाज के बीच घूमते रहे ।

समाज का गुणात्मक और भावात्मक विकास हो ऐसी विविध मौलिक योजनाएँ मोटा ने बनाईं ।

इसके लिए श्रीगुरुमहाराज के आदेश अनुसार एक करोड़ रुपए इकट्ठे किए ।

अंत में संकल्प पूरा किया ।

मोटा की इस अनोखी दानगंगा के विषय में जरूर जानो ।

• • •

(२७) जीवन धन्य किया

श्रीमोटा बहुत महान संत थे ।

मुक्तात्मा थे ।

परन्तु वे समाज में प्रेमभाव से और स्वजनभाव से सबके साथ घूमते-फिरते, हँसते-मिलते रहते थे ।

रहन-सहन भी सीधा-सादा था ।

पहली बार श्रीमोटा को कोई देखे तो उनकी महानता का पता ही न चले ।

मोटा तो साक्षात्कार सम्पन्न सिद्ध संत थे ।

सन् १९३४ में मोटा को भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ ।

२९ मार्च, १९३९ में रामनवमी के शुभ दिन बनारस में निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ ।

मोटा का जीवन 'जीवन-तीर्थ' बन गया ।

परन्तु मोटा का व्यवहार साहजिक ही रहा ।

श्रीमोटा के जीवन का यही बड़प्पन है ।

आगे चलकर मोटा का स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ने लगा ।

मोटा नडियाद आश्रम में थे ।

स्वास्थ्य गिरता जा रहा था ।

१९ जुलाई, १९७६ का दिन था ।

मोटा ने आश्रम का छपा हुआ पैड माँगा ।

सोते-सोते लिखने लगे ।

'लिखा हुआ पत्र' उन्होंने नंदुभाई को २२ जुलाई १९७६ को दिया ।

उसमें लिखा था :

'..... अपनी इच्छानुसार मैं खुशी से अपनी जड़ देह को त्यागना चाहता हूँ ।'

'..... और इसके लिए योग्य समय लगने पर मैं ऐसा करूँगा ।'

'मेरे शरीर का अग्निसंस्कार शान्त जगह पर, मृत्यु स्थल के एकदम नजदीक ही करना ।'

'और वह भी आप छः व्यक्तियों की उपस्थिति में ही करना ।'

'भीड़ इकट्ठी न करना ।'

'मेरी सभी अस्थियों को भी नदी में विसर्जित कर देना ।'

'मेरे नाम का ईंट-चूने का कोई स्मारक नहीं बनाना ।'

'मेरी मृत्यु के निमित्त जो भी राशि इकट्ठी हो, उसका उपयोग गाँवोकी पाठशाला के कमरों के निर्माण करने में करना ।

और स्वेच्छानुसार मोटा ने वडोदरा के नजदीक फाजलपुर में एलेम्बिक वाले श्रीरमणभाई अमीन के मकान में अपने देह का त्याग कर दिया ।'

दिन था २३ जुलाई, १९७६, रात्री में डेढ़ बजे, शुक्रवार।

छः व्यक्तियों की उपस्थिति में मृत्युस्थल के पास ही, मही नदी के किनारे मोटा के शरीरका अग्निसंस्कार किया गया ।

सब कुछ निपटने के बाद श्रीमोटा के देहत्याग का समाचार प्रसिद्ध किया गया ।

सारा गुजरात अवाक हो गया ।

सभी शोक में डूब गए ।

परन्तु मुक्तात्मा श्रीमोटा आकाश में से सभी का आभार मानते हुए मानो कहते थे :

'जिस-जिसने मुझे मदद की है, मेरा काम किया है, उन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।'

'भगवान उनका यश/कल्याण करें ।'

ये हैं श्रीमोटा के अंतिम लेख के उद्‌गार ।

कोटि कोटि वंदन हैं, पूज्य श्रीमोटा को ।

॥ हरि:ॐ ॥

साधना-मर्म

१. मुख से या मन में जागृत रूप से जप, साथ ही हृदयप्रदेश पर ध्यान तथा चेतना के साथ चिंतन सह भावात्मक भाव का रटन ।

२. प्रत्येक क्षण में सतत समर्पण, अच्छे तथा बुरे दोनों का ।

३. साक्षीभाव, जागृति, विचारों की श्रृंखला न जोड़ें ।

४. हो सके उतना अधिक वाचिक और मानसिक मौन रखें, अभ्यस्त हो, अत्यधिक शरणभाव से जीवन में चेतनापूर्वक जागृति से निखारा करो ।

५. आग्रह : प्रभुचिंतन के अलावा सभी आग्रहों को छोड़ें, नम्रता रखें, शून्य होने का ध्येय रखें ।

६. बहुत भावपूर्ण हृदयस्थ हो आर्द्र और आर्तभाव से प्रार्थना करें : भगवान को सभी सुख-दु:ख बतलाते रहें : उनसे आत्मनिवेदन द्वारा बहुत गहरा व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें: मन में कुछ भी विचार न आने दें । मन साफ रखें ।

७. जो भी कार्य करें प्रभु के हैं समझकर करें । जरा भी संकोच किए बिना उसे बहुत प्रेमपूर्वक करें । प्रत्येक प्रसंग-घटना हमारे कल्याण के लिए ही है और प्रत्येक प्रवृत्ति

हमारे अपने विकास के लिए है । प्रत्येक प्रसंग के पीछे प्रभु का गूढ़, शुभ संकेत छिपा है ।

८. आत्मलक्षी - अंतर्मुखी बनें । मात्र अपनी दुनिया में रहें । जान बूझकर अपने आपको न उलझने दें ।

९. अन्य की सेवा में ही प्रभुसेवा समझें । सेवा लेनेवाले, सेवा देनेवाले पर, सेवा करने का अवसर देकर उपकार करते रहें। राम ने दिया है और रामको दे रहे हैं, वहाँ 'मेरा-मेरा' कहाँ रहा? तुम्हारा इस जगत में है क्या?

१०. प्रत्येक कार्य, प्रत्येक बातचीत, व्यवहार हमारे ध्येय को स्मरणभाव की गति दे ऐसे उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर करें। पढ़ते-लिखते समय और प्रत्येक कर्म करते समय भावकी स्मरण धारणाओं का अभ्यास करते रहें ।

११. वृत्ति का मूल खोजें, उसका पृथक्करण करें । उसमें खोये बिना, उसका तटस्थतापूर्वक और स्वस्थतापूर्वक निरीक्षण करें ।

१२. प्रभु की प्रत्येक कला, सौन्दर्य, रमणीयता, विशुद्धता आदि प्रभु के वरदानों में रहे भाव का, रहा भाव हममें प्रगट हो ऐसी प्रार्थना करें ।

१३. उमंग, आवेश और प्रेमभाव को ऐसे ही न जाने दें । साथ ही उसमें डूब भी न जाएँ । उसका साधना में उपयोग करें। तटस्थता बनाए रखें ।

१४. खाते और पानी पीते हुए जीवन में चेतन शक्ति का तन्मय-भाव से प्रार्थना करें : शौच, पेशाब आदि क्रियाओं के समय विकारों, कमजोरियों इत्यादि का विसर्जन के भाव से प्रार्थना करें ।

१५. स्थूलता को त्याग कर सूक्ष्म तत्त्व को ध्यान में रखें । वृत्ति की शुद्धि करें, भाव की वृद्धि करें ।

१६. प्रभु सचराचर हैं । 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना रखें ।

१७. प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु के उज्ज्वल पक्ष को ही देखें । किसी के भी काजी न बनें : किसी को भी जल्दी से अभिप्राय न दें । वादविवाद न करें । अपना आग्रह न रखें, दूसरों के शुभ उद्देश्य में मदद करें । मानसिक और सार्वत्रिक उदारता जीवन में प्रगट करें, अत्यधिक प्रेमभाव बनाए रखें। प्रकृति का रूपान्तर करना है, प्रकृतिवश सहज न होनेवाले कर्मों को नजरअंदाज कर आगे बढ़ें, फल की आसक्ति त्यागें । स्वयं पर होते अन्यायों, आ पड़ती कठिनाइयों आदि का मूल हम में ही है, इसे दृढ़तापूर्वक मानें । गुरु में प्रेमभक्तिभाव को बनाते रहें । तटस्थता, समता और समर्पण के त्रिवेणी संगम को नित्य बनाए रखें। सदा प्रसन्नता बनाए रखें । कृपा और पुरुषार्थ के युगल को जीवन में उतारें । प्रत्येक कर्म के आदि, मध्य और अंत में प्रभु की स्मृति बनाए रखें । मन को नि:स्पंद करें । राग-द्वेष निर्मूल करने की जागृति सदैव रखें । आध्यात्मिक

अनुभवों को नित्य के जीवन में आचरण में लावें । कहीं भी किसी भी दायित्व से भागे नहीं । जो भी प्रभुइच्छा से प्राप्त हो उसे प्रभु-प्रसाद समझकर प्रसन्नता से लें । कहीं भी किसी से तुलना या ईर्ष्या न करें । अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति यह मन का भ्रम है-जीवनसाधना के लिए सब कुछ सानुकूल ही होता है । प्रभुमय - उनके मूक यंत्र होने की एक तमन्ना जीवन में बनाए रखें ।

१८. कर्म में, कर्म का महत्त्व नहीं है, परन्तु जीवन के भाव का सतत एक समान, सजग चिंतन रहा करे, यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है । ऐसा सजग अध्ययन कर्म करते हुए प्रत्येक क्षण में बनाए रखें ।

—श्रीमोटा

पूज्य श्रीमोटा के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

जन्म	:	ता. ४-९-१८९८ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी, संवत १९५४
स्थान	:	सावली, जिल्ला वडोदरा (गुजरात)
नाम	:	चुनीलाल
माता	:	सूरजबा
पिता	:	आशाराम
जाति	:	भावसार ।
१९१६	:	पिता की मृत्यु ।
१९०५ से १९१८	:	टूटक में पढ़ाई के साथ कठिन मजदूरी ।
१९१९	:	मैट्रिक उत्तीर्ण ।
१९१९-२०	:	वडोदरा कॉलेज में ।
दि. ६-४-१९२१	:	कॉलेज का त्याग ।
१९२१	:	गुजरात विद्यापीठ
१९२१	:	विद्यापीठ का त्याग । हरिजन सेवा का आरंभ।
१९२२	:	मिरगी की बीमारी से तंग आकर गरुडेश्वर की चट्टान से आत्महत्या का प्रयास, दैवी रक्षा, 'हरि:ॐ' जप से रोग मिटाने का सफल प्रयोग ।
१९२३	:	'तुज चरणे' तथा 'मनने' की रचना ।
१९२३	:	वसंतपंचमी को पूज्य श्रीबालयोगीजी द्वारा दीक्षा ।

श्रीकेशवानंद धूणीवाले दादा के दर्शन के लिए सांईखेडा गए । रात को स्मशान में साधना और दिनभर प्रभुप्रीत्यर्थ हरिजन सेवा।

१९२६ : विवाह - हस्तमिलाप के अवसर पर समाधि का अनुभव

१९२७ : हरिजन आश्रम, बोदाल में सर्पदंश - परिणामस्वरूप ७६ घंटे तक अखण्ड 'हरि:ॐ' का जाप किया ।

१९२८ : 'तुज चरणे' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन।

१९२८ : प्रथम हिमालय-यात्रा ।

१९२८ : साकोरी के पूज्य श्रीउपासनीबाबा का नडियाद में आगमन, उनके आदेश पर साकोरी गये, वहाँ मलमूत्र के बिस्तर में सात दिन ।

१९३० : मन की नीरवता का साक्षात्कार ।

१९३० से ३२ : इस दौरान साबरमती, वीसापुर, नासिक और यरवडा जेल में । उद्देश्य देशसेवा का नहीं, साधना का । कठोर परिश्रम और लाठी चार्ज के दौरान प्रभुस्मरण-मौन । विद्यार्थियों को समझाने के लिए वीसापुर जेल में सरल गुजराती भाषा में श्रीमद् भागवद्गीता को लिखा–'जीवन गीता' ।

१९३४ : सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार ।

१९३४ से १९३९ : इस दौरान हिमालय में अघोरीबाबा के पास गए । धुवाँधार के जलप्रपात के पीछे की गुफा में साधना । चैत्र मास में २१ उपलों की

६३ धुनियाँ प्रज्वलित की, नर्मदा किनारे खुले में । शिला पर नग्न बैठकर साधना, शीरडी के सांईबाबा के प्रत्यक्ष दर्शन–आदेश– साधना के अंतिम चरण का मार्गदर्शन ।

१९३९ : रामनवमी संवत १९९५ काशी में निर्गुण ब्रह्म
दि. २९-३-३९ का साक्षात्कार । हरिजन सेवक संघ में से त्यागपत्र । 'मनने' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन ।

१९४० : हवाई मार्ग से अहमदाबाद से कराँची जाने
दि. ९-९-४० का गूढ़ आदेश ।

१९४१ : माता की मृत्यु ।

१९४२ : हरिजन सेवक संघ में से अलग होने पर भी हरिजन कन्या छात्रालय के लिए मुंबई में चन्दा इकट्ठा किया । दो बार सख्त पुलिसमार देहातीत अवस्था के प्रमाण ।

१९४३ : २४, फरवरी में गाँधीजी के पेशाब के जहरीले जन्तुओं का अपने पेशाब में दर्शन । नैमित्तिक तादात्म्य का अनुभव ।

१९४५ : हिमालय की यात्रा - अद्‌भुत अनुभव ।

१९४६ : हरिजन आश्रम, अहमदाबाद मीरां कुटीर में मौन एकांत का आरंभ ।

१९५० : दक्षिण भारत के कुंभकोणम् में कावेरी नदी के किनारे हरि:ॐ आश्रम की स्थापना । (१९७६ में देहत्याग के बाद आश्रम बंद कर दिया गया ।)

१९५४	:	सूरत के जहाँगीरपुरा, कुरुक्षेत्र स्मशानभूमि में एक कमरे में मौन एकांत का आरंभ।
१९५५ दि. २८-५-५५	:	नडियाद, शेढी नदी के किनारे हरिः ॐ आश्रम की स्थापना ।
१९५६ दि. २३-४-५६	:	कुरुक्षेत्र स्मशानभूमि, जहाँगीरपुरा, सूरत में हरिः ॐ आश्रम की स्थापना ।
१९६२ से १९७५	:	शरीर के अनेक रोग - लगातार प्रवास के साथ ३६ आध्यात्मिक अनुभव ग्रन्थों का लेखन-प्रकाशन ।
१९७६	:	फाजलपुर, मही नदी के किनारे श्री रमणभाई अमीन के फार्म हाउस में दि. २३-७-७६ को मात्र छः व्यक्तियों की उपस्थिति में आनंदपूर्वक देहत्याग । स्वयं के लिए 'इँट चूने का स्मारक न बनाने का आदेश' और इस निमित्त प्राप्त राशि का उपयोग गुजरात के दूरदराज पिछड़े गाँवो में प्राथमिक पाठशाला के कमरे बनवाने में उपयोग करने की सूचना ।

॥ हरिः ॐ ॥